मुंबई(महाराष्ट्र) से प्रकाशित

हिन्दी दैनिक

उत्तरशक्ति

मुंबई
वर्षः 8 अंक 54
मंगलवार, 02 सितम्बर 2025
मूल्य 3 रुपए, पृष्ठ-6
RNI NO. MAHHIN/2018/76092
email ID- uttarshaktinews@gmail.com
www.uttarshaktinews.com

हर खबर निष्पक्षता के साथ

वोट चोरी पर छोड़ेंगे हाइड्रोजन बम : राहुल गांधी

पटना, 01 सितम्बर। कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने सोमवार को भाजपा को एक आसन्न खुलासे की चेतावनी देते हुए कहा कि वह जल्द ही वोट चोरी के अपने आरोपों पर एक हाइड्रोजन बम छोड़ेंगे, क्योंकि महादेवपुरा के बारे में जो दिखाया गया वह सिर्फ.एक परमाणु बम था। 'मतदाता अधिकार यात्रा' के अंतिम दिन एक सभा को संबोधित करते हुए, गांधी ने भाजपा पर तीखे हमले करते हुए कहा कि महात्मा गांधी की हत्या करने वाली ताकतें अब भारत के संविधान को नष्ट करने की कोशिश कर रही हैं।

कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के नेतृत्व में 16 दिनों तक चलने वाली 'मतदाता अधिकार यात्रा' का उद्देश्य मतदाता अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और कथित ₹वोट चोरी₹ और मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) में कथित अनियमितताओं का विरोध करना है। राहुल गांधी ने पटना में कहा कि जिन ताकतों ने महात्मा गांधी की हत्या की, वही ताकतें डॉ. बीआर अंबेडकर और महात्मा गांधी के संविधान को नष्ट करने की कोशिश कर रही हैं। हम उन्हें भारत के संविधान को नष्ट नहीं करने देंगे। यात्रा के दौरान हमें बहुत समर्थन मिला। बिहार का हर युवा, बच्चा हमारे साथ खड़ा था... मैं भाजपा के लोगों से कहना चाहता हूं कि, महादेवपुरा में, हमने परमाणु बम दिखाया था, लेकिन जल्द ही हम हाइड्रोजन बम लेकर आएंगे, भाजपा तैयार हो जाओ। राहुल ने साफ तौर पर

कहा कि उनकी सच्चाई देश को दिखाई जाएगी। मैं बिहार के लोगों का हमारी मदद करने के लिए आभार व्यक्त करता हूं... मैं आपको गारंटी देता हूं, हाइड्रोजन बम के बाद, नरेंद्र मोदी जी इस देश को अपना चेहरा नहीं दिखा पाएंगे। लोकसभा नेता प्रतिपक्ष ने वोट चोरी को अधिकारों, आरक्षण, रोजगार, शिक्षा और लोकतंत्र की चोरी₹ करार दिया। उन्होंने कहा कि हमने प्रेस कॉन्फ्रेंस की और लोगों को दिखाया।

भारत का चुनाव आयोग हमें मतदाता सूची, वीडियोग्राफी नहीं देता... हमने देश के सामने सबूत पेश किए। 'वोट चोरी' का मतलब है हमारे अधिकारों, आरक्षण, रोजगार, शिक्षा और लोकतंत्र की चोरी। वे आपका राशन कार्ड, जमीन छीनकर अडानी और अंबानी को दे देंगे।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) द्वारा कथित 'वोट चोरी' और भारत के चुनाव आयोग द्वारा मतदाता सूची में कथित अनियमितताओं को उजागर करने के लिए राहुल गांधी द्वारा निकाली गई 16 दिवसीय यात्रा आज पटना में समाप्त होगी। यह अभियान 17 अगस्त को शुरू हुआ था, जिसमें राहुल गांधी और राष्ट्रीय जनता दल (राजद) नेता तेजस्वी यादव सासाराम से एक साथ यात्रा का संचालन कर रहे थे। वहाँ से, रैली 25 जिलों से होते हुए औरंगाबाद, गयाजी, सीवान और अन्य जिलों तक पहुँची।

जरांगे का आंदोलन शांतिपूर्ण नहीं, दो सितंबर तक मुंबई की सभी सड़कें खाली कराएं: उच्च न्यायालय

मुंबई, 01 सितम्बर। बंबई उच्च न्यायालय ने सोमवार को कहा कि कार्यकर्ता मनोज जरांगे के नेतृत्व में मराठा आरक्षण आंदोलन के कारण पूरा शहर ठहर गया है और यह प्रदर्शन शांतिपूर्ण नहीं है तथा इसमें सभी शर्तों का उल्लंघन किया गया है।

उच्च न्यायालय ने मुंबई में सामान्य स्थिति बहाल करने का आग्रह किया और जरांगे तथा उनके समर्थकों को हालात सुधारने तथा मंगलवार दोपहर तक सभी सड़कें खाली करने का अवसर दिया। जरांगे 29 अगस्त से दक्षिण मुंबई स्थित आजाद मैदान में अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर बैठे हैं। वह मराठा समुदाय को अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) श्रेणी के तहत 10 प्रतिशत आरक्षण दिये जाने की मांग कर रहे हैं। उनके

समर्थकों ने दावा किया कि जरांगे ने सोमवार से पानी पीना बंद कर दिया है।

न्यायमूर्ति रवींद्र घुगे और न्यायमूर्ति गौतम अंखड की पीठ ने विशेष सुनवाई में कहा कि प्रदर्शनकारी आंदोलन के लिए निर्धारित स्थान आजाद मैदान पर नहीं रुके हैं और उन्होंने दक्षिण मुंबई के कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों को अवरुद्ध कर दिया है। अदालत ने कहा, स्थिति गंभीर है और मुंबई शहर लगभग ठहर सा गया है। अदालत ने कहा कि प्रदर्शनकारी छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस (सीएसएमटी) और चर्चगेट रेलवे स्टेशनों, मरीन ड्राइव सैरगाह और उच्च न्यायालय भवन जैसे महत्वपूर्ण स्थानों पर जमा हो गए हैं। अदालत ने कहा कि आंदोलन शांतिपूर्ण नहीं है और जरांगे तथा अन्य प्रदर्शनकारियों ने दक्षिण मुंबई के आजाद मैदान में शांतिपूर्ण प्रदर्शन की अनुमति देते समय प्राधिकारों द्वारा निर्धारित प्रत्येक शर्त का उल्लंघन किया है।

सरकार मराठा आंदोलन पर न्यायालय के निदेशों को लागू करेगी : फडणवीस

मुंबई, 01 सितम्बर। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने सोमवार को कहा कि प्रशासन मराठा आरक्षण के लिए कार्यकर्ता मनोज जरांगे के नेतृत्व में जारी प्रदर्शन पर मुंबई उच्च न्यायालय के निदेशों को लागू करेगा। मुख्यमंत्री का यह आश्वासन उच्च न्यायालय द्वारा यह टिप्पणी किए जाने के कुछ ही देर बाद आया कि जरांगे और उनके समर्थकों ने प्रथम दृष्टया शर्तों का उल्लंघन किया है। न्यायमूर्ति रवींद्र घुगे और न्यायमूर्ति गौतम अंखड की पीठ ने कहा कि चूंकि प्रदर्शनकारियों के पास आंदोलन जारी रखने के लिए वैध अनुमति नहीं है, इसलिए वह उम्मीद करती है कि राज्य सरकार उचित कदम

उठाकर कानून में निर्धारित प्रक्रिया का पालन करेगी।

अदालत ने कहा कि सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि अब कोई भी प्रदर्शनकारी शहर में प्रवेश न कर सके, जैसा कि जरांगे ने दावा किया है। फडणवीस ने पुणे में संवाददाताओं से कहा, सरकार उच्च न्यायालय के निदेशों को लागू करेगी।

उन्होंने इस आरोप को खारिज कर दिया कि कानून-व्यवस्था ध्वस्त हो गई है। मुख्यमंत्री ने कहा, (मराठा प्रदर्शनों से संबंधित) छिटपुट घटनाएं हुई हैं, जिन्हें पुलिस ने कुछ ही देर में संभाल लिया। फडणवीस ने विरोध प्रदर्शन समाप्त कराने के सवाल पर कहा, बातचीत माइक पर नहीं हो सकती, हमें पता होना चाहिए कि किससे बात करनी है। हम अड़े नहीं हैं। उन्होंने यह भी कहा कि आज सुबह हुई बैठक में कानूनी विकल्पों पर चर्चा की गई।

जगदीप धनखड़ ने उपराष्ट्रपति का आवास खाली किया, छतरपुर स्थित निजी फार्महाउस में हुए शिफ्ट

नई दिल्ली, 01 सितम्बर। पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने सोमवार को अपना सरकारी आवास खाली कर दिया, एएनआई ने सूत्रों के हवाले से बताया। वह दक्षिण दिल्ली के छतरपुर स्थित एक निजी आवास में शिफ्ट हो गए हैं और अंततः टाइप-8 बंगले में शिफ्ट हो गए हैं, जो एक पूर्व उपराष्ट्रपति को मिलता है। छतरपुर के गदाईपुर इलाके में स्थित यह फार्महाउस इनेलो नेता अभय चौटाला का है। कथित तौर पर उन्हें यह सरकारी आवास आवंटित कर दिया गया है, लेकिन इसमें कुछ समय लगेगा क्योंकि वहाँ नवीनीकरण का काम चल रहा है।

एक दिन पहले, धनखड़ ने राजस्थान विधानसभा के पूर्व सदस्य के रूप में अपनी पेंशन फिर से शुरू करने के लिए आवेदन किया था। उन्होंने

1993 से 1998 तक राजस्थान के किशनगढ़ निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस विधायक के रूप में कार्य किया था। धनखड़ जुलाई 2019 तक विधायक पेंशन प्राप्त कर रहे थे, जब पश्चिम बंगाल के राज्यपाल के रूप में उनकी नियुक्ति के बाद इसे रोक दिया गया था। 21 जुलाई को जगदीप धनखड़ का अचानक इस्तीफा सभी राजनीतिक दलों के नेताओं के लिए एक बड़ा झटका था। उपराष्ट्रपति धनखड़ ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को एक पत्र लिखा और अपने बिगड़ते स्वास्थ्य को इस महत्वपूर्ण पद को छोड़ने का कारण बताया। कई विपक्षी नेताओं ने आरोप लगाया कि धनखड़ ने भाजपा के दबाव में इस्तीफा दिया।

विपक्षी नेताओं ने धनखड़ के ठिकाने को लेकर हंगामा खड़ा कर दिया क्योंकि वह अपने पद से इस्तीफा देने के बाद से जनता की नजरों से दूर रहे थे। कपिल सिब्बल और संजय राउत समेत कई नेताओं ने गृह मंत्री अमित शाह को पत्र लिखकर धनखड़ के बारे में जानकारी मांगी।

मतदाता सूची भाजपा की इच्छा के अनुसार तैयार की जा रही है : हेमंत सोरेन

रांची। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने सोमवार को आरोप लगाया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार विशेष गहन मतदाता पुनरीक्षण (एसआईआर) के नाम पर लोगों के अधिकार छीन रही है और मतदाता सूची सत्तारूढ़ गठबंधन की इच्छा के अनुसार तैयार की जा रही है।

बिहार में कांग्रेस की वोटर अधिकार यात्रा के समापन पर पटना में एक रैली को संबोधित करते हुए झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के नेता ने राजग सरकार पर फूट डालो और राज करो की नीति अपनाने का आरोप लगाया।

उन्होंने सत्तारूढ़ गठबंधन को सत्ता से बेदखल करने के लिए इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस (इंडिया) गठबंधन के घटक दलों से एकजुट रहने का आह्वान किया। उन्होंने भाजपा पर राज्य सरकारों को गिराने के लिए वोट चोरी करने और विधायकों की खरीद-फरोख्त में लिप्त होने का भी आरोप लगाया। सोरेन ने कहा, भाजपा प्रवर्तन निदेशालय (ईडी), केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) और अन्य केंद्रीय एजेंसियों का विपक्षी नेताओं के खिलाफ इस्तेमाल कर रही है।

उत्तराखंड में चारधाम यात्रा 5 सितंबर तक स्थगित

उत्तराखंड, 01 सितम्बर। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री के सचिव एवं गढ़वाल आयुक्त विनय शंकर पांडे ने बताया कि उत्तराखंड में लगातार हो रही बारिश को देखते हुए राज्य सरकार ने चारधाम और हेमकुंड साहिब यात्रा को 5 सितंबर, 2025 तक स्थगित कर दिया है। गढ़वाल आयुक्त पांडे ने कहा कि भारी बारिश के कारण राज्य में कई जगहों पर भूस्खलन या मलबा आने से सड़कें बाधित हो रही हैं, जिन्हें सरकार प्राथमिकता के आधार पर खोल रही है, लेकिन यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा को देखते हुए चारधाम और हेमकुंड साहिब यात्रा को 5 सितंबर तक स्थगित करने का निर्णय लिया गया है।

पांडे ने यात्रियों से अपील की कि वे प्रतिकूल मौसम को देखते हुए फिलहाल यात्रा मार्गों पर न

निकलें और प्रशासन द्वारा जारी एडवाइजरी का पालन करें। उन्होंने कहा कि यात्रियों से अनुरोध है कि वे धैर्य और संयम बनाए रखें और यात्रा से संबंधित अद्यतन जानकारी के लिए प्रशासनिक नियंत्रण कक्ष के संपर्क में रहें। इसके अलावा, गढ़वाल मंडल आयुक्त ने बताया कि राज्य सरकार और स्थानीय प्रशासन सड़क मार्गों पर यात्रियों की निगरानी, सफाई और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठा रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि मौसम सामान्य होने और मार्ग पूरी तरह सुरक्षित पाए जाने के बाद यात्राएँ फिर से शुरू की जाएँगी। इस बीच, मौसम विभाग द्वारा जारी भारी बारिश के रेड और ऑरेंज अलर्ट के बीच यह निर्णय लिया गया। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने बताया कि क्षेत्र के कुछ ज़िले वर्तमान में मौसम विभाग द्वारा जारी रेड और ऑरेंज अलर्ट के अंतर्गत हैं, और अगले 24-48 घंटे महत्वपूर्ण होंगे। मुख्यमंत्री धामी ने कहा कि हमारे कुछ जिले रेड अलर्ट पर हैं और कुछ जिले ऑरेंज अलर्ट पर हैं। अगले 24-48 घंटे महत्वपूर्ण हैं और हम सभी को कड़ी निगरानी रखनी होगी। हमारा पूरा जिला प्रशासन, एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, सभी विभाग अलर्ट पर हैं। हम नानक सागर बांध पर भी नजर रख रहे हैं। यह खतरे के निशान से 5 फीट नीचे बह रहा है। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री ने कहा, ₹जिन लोगों के घर आपदा से प्रभावित हुए हैं, हम उन्हें तत्काल सहायता प्रदान कर रहे हैं और उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुँचा रहे हैं। शिविर भी स्थापित किए गए हैं। हमारा लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि राहत शिविरों में सभी बुनियादी जरूरतें पूरी हों।

निजी बस ने ट्रेलर ट्रक को मारी टक्कर, चार लोगों की मौत

तेलंगाना। तेलंगाना के महबूबनगर जिले में सोमवार तड़के एक निजी बस ने ट्रेलर ट्रक को पीछे से टक्कर मार दी, जिससे बस में सवार चार लोगों की मौत हो गई जबकि अन्य लोग घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि यह दुर्घटना अडकल पुलिस थाना क्षेत्र में आधी रात के बाद करीब 2.15 बजे हुई। एक अधिकारी ने बताया कि दुर्घटना में तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई जबकि पांच अन्य लोग घायल हो गए। उन्होंने बताया कि घायलों को अस्पताल ले जाया गया, जहां उनमें से एक की उपचार के दौरान मौत हो गयी।

चीन-भारत के मिठासभरे संबंधों से नयी विश्व संरचना संभव

-ललित गर्ग

शंघाई कोऑपरेशन ऑर्गनाइजेशन (एससीओ) शिखर बैठक में हिस्सा लेने पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच रविवार को हुई द्विपक्षीय बातचीत पर अगर दुनिया भर की नजरें टिकी थीं तो यह उद्देश्यपूर्ण एवं वजहपूर्ण थी, क्योंकि बदलती दुनिया में हाथी और ड्रैगन का साथ-साथ चलना जरूरी हो गया है। दोनों शीर्ष नेताओं की सौहार्दपूर्ण बातचीत ने न केवल दोनों देशों के रिश्तों में बढ़ते सामंजस्य की प्रक्रिया को मजबूती दी है बल्कि कई तरह की अनिश्चितताओं के बीच विश्व अर्थ-व्यवस्था के लिए भी नई संभावनाएं पैदा की हैं, चीन में दिखे दोनों देशों के मिठासभरे संबंध अनेक नई आशाओं एवं उम्मीदों को नया आकाश देने वाले बनते हुए प्रतीत हुए हैं। दोनों देशों के रिश्तों में लंबे समय बाद सकारात्मकता की नई हवा बहती दिखाई दे रही है। एससीओ शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री मोदी और चीनी राष्ट्रपति जिनपिंग की मुलाकात ने संकेत दिया है कि दोनों देश पुराने मतभेदों और अविश्वास को पीछे छोड़कर साझेदारी की नई इबारत लिखना चाहते हैं। यह मुलाकात केवल कूटनीतिक शिष्टाचार नहीं थी, बल्कि बदलते वैश्विक परिदृश्य में सहयोग और संवाद की अपरिहार्यता को स्वीकार करने का प्रयास थी।

भारत-चीन दोनों ही विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्थाएं और विशाल जनसंख्या वाले देश हैं। ऐसे में यदि दोनों साथ आते हैं तो न केवल आपसी विकास संभव है, बल्कि वैश्विक संतुलन और शांति की दिशा में भी बड़ा योगदान होगा। हालांकि सीमाई विवाद और विश्वास की कमी जैसे मुद्दे अब भी बने हुए हैं, परंतु यदि इन्हें परे रखकर साझा आर्थिक, सामरिक और सांस्कृतिक सहयोग को प्राथमिकता दी जाए तो यह संबंध नई ऊँचाइयों को छू सकते हैं। भारत और चीन के बीच यह संवाद केवल दो देशों तक सीमित नहीं है, बल्कि अमेरिका और पश्चिमी देशों के दबदबे के बीच एशियाई शक्ति संतुलन को नई दिशा दे सकता है। यदि दोनों राष्ट्र व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाकर आपसी हितों पर ध्यान केंद्रित करें तो न केवल तनाव कम होंगे, बल्कि विश्व राजनीति में एशिया की भूमिका भी मजबूत होगी। निश्चित ही लंबे समय से चली आ रही आपसी अविश्वास की दीवारों और तनाव की बर्फ को पिघलाने का प्रयास हुआ है। सबसे पहले, इन वार्ताओं ने यह संकेत दिया है कि भारत और चीन अब केवल मतभेदों में उलझे रहने के बजाय साझेदारी की संभावनाओं पर ध्यान दे रहे हैं। व्यापार, निवेश और तकनीकी सहयोग की दिशा में नए आयाम खुल सकते हैं। चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है और यदि यह संबंध संतुलन और पारस्परिक विश्वास पर आधारित हो जाए, तो दोनों देशों की अर्थव्यवस्था को अपार गति मिल सकती है। इस मुलाकात ने अमेरिका की “दादागिरी” पर भी चोट की है। डोनाल्ड ट्रंप की आक्रामक आर्थिक नीतियों और संरक्षणवादी रुख एशिया के उभरते राष्ट्रों को नई गठबंधन राजनीति की ओर धकेल रहा है। भारत-चीन के बीच बढ़ती समझदारी और रूस की भूमिका के साथ एक “त्रिकोणीय शक्ति” का उभार संभव है, जो पश्चिमी वर्चस्व को चुनौती देगा। यह न केवल शक्ति-संतुलन की नई धुरी बनेगा, बल्कि विश्व शांति और सौहार्द की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। पाकिस्तान पर भी इसका असर दिखना स्वाभाविक है। भारत-चीन की नजदीकी पाकिस्तान के लिए असुविधा का कारण बनेगी, क्योंकि उसकी विदेश नीति लंबे समय से चीन पर आश्रित रही है। भारत-चीन संबंधों का यह नया अध्याय यदि संतुलित, यथार्थवादी और सावधानीपूर्वक आगे बढ़ाया जाए तो एशिया ही नहीं, पूरे विश्व की राजनीति में एक स्थिरता और संतुलन स्थापित हो सकता है। यह विश्व को बहुध्रुवीय बनाने की दिशा में ठोस कदम होगा। लेकिन, इन सकारात्मक संकेतों के बावजूद भारत को सावधानी बरतनी होगी। इतिहास गवाह है कि चीन के साथ हर मित्रवत वार्ता के पीछे उसका रणनीतिक हित गहराई से काम करता है। डोकलाम, गलवान और सीमाई विवाद आज भी अधर में हैं। चीन की आर्थिक नीतियों और विस्तारवादी प्रवृत्ति को अनदेखा करना भारत के लिए नुकसानदायक साबित हो सकता है। इसलिए यह साझेदारी अवसर तो है, लेकिन चुनौती भी। भारत को यह ध्यान रखना होगा कि व्यापारिक रिश्तों और राजनीतिक साझेदारी में आत्मनिर्भरता और सुरक्षा सर्वोपरि रहे। भारत को हर स्थिति में अपनी संप्रभुता, सुरक्षा और रणनीतिक हितों के साथ कोई समझौता नहीं करना चाहिए। भले ही शंघाई सहयोग संगठन में आतंकवाद से लड़ना भी शामिल हो, लेकिन इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि चीन ने इस मुद्दे पर किस तरह भारतीय हितों के खिलाफ काम किया है। पाकिस्तान के खिलाफ ऑपरेशन सिन्दूर के समय चीन की भूमिका को ओझल नहीं किया जा सकता। बावजूद इसके चीन भारत की निकटता वक्त की जरूरत है।

2020 में हुई गलवान घाटी की झड़प के बाद यह प्रधानमंत्री मोदी का पहला चीन दौरा है। जाहिर है, दोनों देशों के रिश्तों के मद्देनजर यह सवाल महत्वपूर्ण था कि इस बैठक में दोनों शीर्ष नेताओं के बीच बनी सहमति कितनी दूर तक जाती है। लेकिन इसी बीच अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप की टैरिफ घोषणाओं से जो असामान्य हालात पैदा हुए हैं, उसने दोनों नेताओं की बातचीत की अहमियत को और बढ़ा दिया। अमेरिका एवं चीन, अमेरिका एवं भारत के नये बने तनावपूर्ण माहौल में हुई मोदी और शी की इस बातचीत ने कई स्तरों पर पॉजिटिव संकेत दिए हैं। खासकर प्रधानमंत्री मोदी का यह कहना अर्थपूर्ण है कि भारत और चीन दोनों ही देश सामरिक स्वायत्तता रखते हैं और इनके आपसी रिश्तों को किसी तीसरे देश के चश्मे से नहीं देखा जाना चाहिए। ध्यान रहे, ट्रंप ने भारत पर जो 50 फीसदी टैरिफ लगाया है, उसके लिए एक तीसरे देश रूस के साथ भारत के रिश्तों को ही आधार बनाया गया है। इस बयान के जरिए प्रधानमंत्री मोदी ने यह परोक्ष संकेत दिया है कि सामरिक स्वायत्तता का सम्मान करते हुए ही द्विपक्षीय रिश्ते फल-फूल सकते हैं। इस तरह प्रधानमंत्री मोदी और चीन के राष्ट्रपति जिनपिंग की मुलाकात न केवल द्विपक्षीय रिश्तों को पुनर्परिभाषित करती है, बल्कि वैश्विक राजनीति पर भी गहरा असर डाल रही है। इस वार्ता को महज दो पड़ोसी देशों का संवाद मानना भूल होगी; यह इक्कीसवीं सदी के बदलते शक्ति समीकरणों का प्रतीक है, यह एक नये शक्ति का अभ्युदय दुनिया में संतुलन एवं शांति का सशक्त माध्यम बनेगा।

भारत, चीन और रूस के बीच बढ़ती नजदीकी वैश्विक शक्ति-संतुलन के नए युग की आहट देती है। यदि यह त्रिकोणीय शक्ति प्रभावी रूप से उभरती है, तो न केवल एशिया की आर्थिकी और सुरक्षा संरचना को मजबूती मिलेगी, बल्कि विश्व में बहुध्रुवीयता की वास्तविक नींव भी रखी जाएगी। ऊर्जा, रक्षा, तकनीक और व्यापार जैसे क्षेत्रों में तीनों देशों का सहयोग पश्चिमी देशों की एकाधिकारवादी प्रवृत्ति को चुनौती देगा। खासकर रूस की सामरिक मजबूती, चीन की आर्थिक शक्ति और भारत का जनतांत्रिक एवं नैतिक प्रभाव मिलकर ऐसी नई धुरी रच सकते हैं, जो केवल शक्ति का संतुलन ही नहीं बल्कि शांति और सह-अस्तित्व की भी नई परिभाषा प्रस्तुत करेगी।

दूसरी ओर, यह उभरता हुआ शक्ति-संतुलन अमेरिका की “दादागिरी” के लिए एक सीधी चुनौती है। डोनाल्ड ट्रंप की विदेश नीति संरक्षणवाद, दबाव और व्यापार युद्ध की रणनीति पर टिकी रही है, जिसने न केवल चीन बल्कि भारत जैसे देशों को भी सतर्क किया है। यदि भारत-चीन-रूस का यह समीकरण मजबूत होता है, तो ट्रंप की एकतरफा नीतियां प्रभावहीन हो जाएंगी और वैश्विक राजनीति में अमेरिका का वर्चस्व सीमित हो जाएगा। इस नये शक्ति-संतुलन से छोटे और विकासशील देशों को भी राहत मिलेगी, क्योंकि उन्हें अब केवल एक ध्रुवीय दबाव का सामना नहीं करना पड़ेगा। यह स्थिति विश्व में लोकतांत्रिक संतुलन और समानता की भावना को प्रोत्साहित करेगी।यह शुभ संकेत है कि अब हाथी और ड्रैगन के साथ आने की संभावना रेखांकित की जाने लगी है। लेकिन उसके लिए अभी दोनों देशों को लंबी दूरी तय करनी होगी, बहुत सारे मतभेद और विवाद दूर करने होंगे। इसका अंदाजा दोनों पक्षों को है। तभी बैठक के बाद जारी बयान में कहा गया है कि मतभेद झगड़े में तब्दील नहीं होने चाहिए।

सत्ता का अधिपत्य नहीं, सांस्कृतिक चेतना है हिंदू राष्ट्र

-सुरेश गांधी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) का स्थापना वर्ष 1925 से लेकर आज तक भारतीय समाज और राष्ट्र निर्माण में उसकी भूमिका उल्लेखनीय रही है। संघ ने समाज में नैतिकता, संस्कृति और सेवा के मूल्यों को मजबूत किया है। 2025 में संघ का शताब्दी वर्ष केवल संगठन की उपलब्धियों का उत्सव नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश लेकर आया है। संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित तीन दिवसीय व्याख्यान माला “100 वर्ष की संघ यात्राः नए क्षितिज” में संघ की विचारधारा, कार्यशैली और भविष्य की दिशा पर विस्तार से विचार प्रस्तुत किए। उनका दृष्टिकोण स्पष्ट हैः राष्ट्र निर्माण केवल सत्ता या राजनीति तक सीमित नहीं, बल्कि सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक जागरूकता के माध्यम से संभव है। डॉ. भागवत का यह संदेश वर्तमान समय में विशेष प्रासंगिक है, जब भारत के सामाजिक ताने-बाने में विविधता के बावजूद एकता बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो गया है। उनका मानना है कि व्यक्ति और समाज दोनों का सशक्तिकरण राष्ट्र की मजबूती के लिए अनिवार्य है।

डॉ. भागवत ने “हिंदू” की परिभाषा को पारंपरिक धार्मिक सीमाओं से हटाकर सांस्कृतिक और समावेशी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। उनके अनुसार हिंदू केवल जातीय या धार्मिक पहचान नहीं, बल्कि जीवन दर्शन और सांस्कृतिक मूल्य है। इस दृष्टिकोण से यह संदेश मिलता है कि हिंदूत्व में विविधताओं को स्वीकार करना और उनमें एकता बनाए रखना महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहाः “जो सबको साथ लेकर चलता है, वही हिंदू है।” यह विचार भारतीय समाज में रूढ़िवाद को चुनौती देता है और आधुनिक भारत में व्यापक पहचान स्थापित करता है। हिंदूत्व केवल धार्मिक कर्मकांड या जातीयता तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन के नैतिक मूल्यों, संस्कार और सामाजिक उत्तरदायित्व से जुड़ा है। शताब्दी वर्ष की तैयारी में संघ ने दिल्ली विज्ञान भवन में तीन दिवसीय व्याख्यान माला आयोजित की। इस कार्यक्रम में डॉ. भागवत ने गंभीरता और संतुलन के साथ संगठन की विचारधारा, कार्यप्रणाली और भविष्य की दिशा को रेखांकित किया। यह आयोजन केवल संघ के भीतर के लोगों के लिए नहीं, बल्कि समाज के सभी वर्गों के लिए एक आमंत्रण था, संवाद और विचार विमर्श के लिए।

संघ और भाजपा के संबंध

अक्सर यह कहा जाता रहा है कि संघ भाजपा को नियंत्रित करता है। डॉ. भागवत ने इसे पूरी तरह स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि संघ और भाजपा स्वतंत्र संस्थाएं हैं। संघ का उद्देश्य केवल समाज को जोड़ना और राष्ट्र निर्माण में योगदान देना है, न कि सत्ता में भागीदारी। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि संघ भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव में कभी हस्तक्षेप नहीं करता। संघ का कार्य है समाज को नैतिक और वैचारिक रूप से सशक्त करना, ताकि नागरिक अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को समझ सकें। डॉ. भागवत ने रिटायरमेंट और उम्र पर भी अपनी राय दी। उनका कहना था कि उम्र केवल एक आंकड़ा है; यदि व्यक्ति सक्षम और सक्रिय है, तो 80 साल की उम्र में भी वह समाज और राष्ट्र के लिए काम कर सकता है। उन्होंने आदर्श परिवार संरचना में तीन बच्चों की सलाह दी, जिससे सामाजिक और आर्थिक संतुलन बनाए रखा जा सके।

काशी, मथुरा और ज्ञानवापी मुद्दे पर संघ की स्थिति

डॉ. भागवत ने काशी, मथुरा और ज्ञानवापी जैसे संवेदनशील मुद्दों पर संघ की स्थिति स्पष्ट की। उनका कहना था कि संघ इन मुद्दों पर कोई आंदोलन नहीं करेगा, लेकिन स्वयंसेवक व्यक्तिगत रूप से अपने दृष्टिकोण और मान्यताओं के अनुसार आंदोलन में भाग ले सकते हैं। उन्होंने मुस्लिम समुदाय से भी समझदारी और संवेदनशीलता बनाए रखने का आह्वान किया। यह दृष्टिकोण साम्प्रदायिक सौहार्द और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देता है। संघ केवल वैचारिक मार्गदर्शन देता है, प्रत्यक्ष संघर्ष या हिंसा में शामिल नहीं होता। संघ का यह दृष्टिकोण समाज के प्रत्येक व्यक्ति और समुदाय को संयम और समझदारी के साथ कार्य करने का संदेश देता है। यह भारतीय लोकतंत्र और सामाजिक समरसता को मजबूती प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आरक्षण और सामाजिक समरसता

डॉ. भागवत ने आरक्षण के मुद्दे पर संतुलित दृष्टिकोण पेश किया। उन्होंने कहा कि निचले वर्गों को सशक्त बनाने के लिए आरक्षण आवश्यक है, लेकिन यह तब तक होना चाहिए जब तक वे स्वयं इसे लेने से इनकार न कर दें। साथ ही उन्होंने सामाजिक मेल-जोल और समानता पर जोर दिया। उनका कहना था कि दलितों और पिछड़ों के साथ समानता और सम्मान के साथ व्यवहार करने से समाज में दूरी घटेगी और एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण होगा। संघ का यह दृष्टिकोण केवल नीति तक सीमित नहीं है। यह समाज के आचरण और संस्कार को बदलने की दिशा में भी योगदान देता है। समावेशिता, न्याय और सामाजिक सहभागिता के माध्यम से संघ भारतीय समाज में स्थायी सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में कार्य करता है।

नेतृत्व और संघ का भविष्य

डॉ. भागवत ने संघ के भविष्य और नेतृत्व पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि संघ में समय के अनुसार बदलाव संभव हैं, लेकिन तीन मूलभूत तत्व अपरिवर्तनीय हैंः व्यक्ति निर्माण से समाज के आचरण में परिवर्तन संभव है। पहले समाज बदलना चाहिए, फिर व्यवस्था और शासन बेहतर होंगे। हिंदुस्थान हिंदू राष्ट्र है। उन्होंने यह भी कहा कि संघ में स्वयंसेवकों को पद, पैसा या सत्ता नहीं मिलता; उन्हें केवल सेवा का अवसर मिलता है। यह सेवा समाज और राष्ट्र दोनों के लिए है। संघ का उद्देश्य सत्ता में भागीदारी नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र को नैतिक और वैचारिक रूप से सशक्त बनाना है। डॉ. भागवत का यह दृष्टिकोण स्पष्ट करता है कि संघ संगठनात्मक और नैतिक दृष्टि दोनों से समाज में बदलाव लाने का प्रयास कर रहा है।

राष्ट्र निर्माण में संघ का योगदान

संघ का कार्य केवल संगठनात्मक विस्तार तक सीमित नहीं है। यह समाज की नैतिक, सांस्कृतिक और वैचारिक मजबूती पर केंद्रित है। संघ ने शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्राम विकास, सांस्कृतिक जागरूकता और सामाजिक सेवा के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डॉ. भागवत ने भी इस बात पर जोर दिया कि राष्ट्र निर्माण का मार्ग शिक्षा और मूल्य आधारित समाज से होकर गुजरता है। व्यक्ति के नैतिक और सामाजिक विकास के बिना राष्ट्र का सशक्त होना असंभव है। संघ के स्वयंसेवक गांव-गांव, नगर-नगर जाकर समाज की जागरूकता और सेवा का काम कर रहे हैं। संघ द्वारा चलाए जा रहे स्वयंसेवा शिविर, स्वास्थ्य जांच अभियान, पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम और शिक्षा संवर्धन परियोजनाएँ देशभर में समाज के कमजोर वर्गों तक पहुँच बनाती हैं। यह कार्य राष्ट्र निर्माण में संघ की व्यावहारिक भूमिका को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

शैक्षिक और सांस्कृतिक योगदान

डॉ. भागवत ने संघ की शिक्षा और संस्कृति पर आधारित पहलुओं को भी रेखांकित किया। संघ के द्वारा चलाए जाने वाले विद्यालय और प्रशिक्षण केंद्र युवा पीढ़ी में नैतिकता, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक जिम्मेदारी विकसित करते हैं। संघ का मानना है कि युवा राष्ट्र के भविष्य का आधार हैं। इसलिए उनका प्रशिक्षण केवल अकादमिक ज्ञान तक सीमित नहीं, बल्कि व्यक्तित्व विकास, सामाजिक चेतना और सेवा भावना तक विस्तारित है। सांस्कृतिक दृष्टि से भी संघ ने विविधताओं में एकता बनाए रखने का काम किया है। भारत के विभिन्न राज्यों में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम, लोक कला और भाषा संवर्धन योजनाएँ यह सुनिश्चित करती हैं कि देश की विविध सांस्कृतिक धरोहर बनी रहे और आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचे। डॉ. मोहन भागवत के विचार और संघ की शताब्दी वर्ष की व्याख्यान माला से यह स्पष्ट होता है कि संघ समय के अनुसार अपनी कार्यशैली और दृष्टिकोण में परिवर्तन ला रहा है। यह बदलाव संगठनात्मक शक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज के नैतिक, सांस्कृतिक और वैचारिक विकास पर केंद्रित है। संघ का समावेशी दृष्टिकोण, सामाजिक समरसता और राष्ट्र निर्माण की दिशा में योगदान आज अत्यंत प्रासंगिक है। डॉ. भागवत का संदेश यह स्पष्ट करता है कि समाज में एकजुटता, नैतिकता और समावेशिता से ही राष्ट्र सशक्त और आत्मनिर्भर बन सकता है। शताब्दी वर्ष का यह संदेश न केवल संघ के स्वयंसेवकों के लिए प्रेरणादायक है, बल्कि पूरे देश के नागरिकों के लिए मार्गदर्शक है। राष्ट्र निर्माण केवल राजनीतिक निर्णयों से नहीं होता, बल्कि समाज के प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी, जागरूकता और सक्रिय भागीदारी से संभव है। संक्षेप में, आरएसएस और डॉ. मोहन भागवत की यह यात्रा भारतीय समाज के समग्र विकास, सांस्कृतिक जागरूकता और राष्ट्र निर्माण की दिशा में प्रेरणादायक मार्गदर्शन प्रस्तुत करती है। मोहन भागवत का स्पष्ट विचार है कि भारत अगले 20 से 30 वर्षों में विश्वगुरु बनेगा। मगर इसके लिए समाज को शिक्षा, संस्कार और आत्मगौरव से भरी नई पीढ़ी तैयार करनी होगी। उन्होंने मिशनरी गतिविधियों, भारतीय परंपरा, जनसंख्या, सरकार-संघ संबंध और हिंदू राष्ट्र जैसे मुद्दों पर खुलकर अपनी बात रखी। भागवत ने कहा कि 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद अंग्रेजों ने भारत की छवि बिगाड़ने की साजिश की। देश के बारे में भ्रांतियां फैलाई गईं, ताकि भारत कभी सिर न उठा सके। लेकिन स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में अपने विचारों से इन सबको करारा जवाब दिया। आज भी हमारे खिलाफ झूठ और विकृति फैलाई जाती है, ताकि प्रगति रुक जाए। मगर भारत अब जाग चुका है। संघ प्रमुख ने मिशनरी संस्थाओं के कामकाज पर निशाना साधते हुए कहा कि असली सेवा तो भारत के संत और समाजसेवी कर रहे हैं। “मिशनरी संस्थाओं के मुकाबले हमारे संत कहीं अधिक काम करते हैं। सेवा हमारे जीवन का अंग है, दिखावे का साधन नहीं।

मोहन भागवत का संदेश केवल भाषण नहीं, बल्कि भविष्य का खाका है। इसमें हिंदू राष्ट्र की व्यापक अवधारणा, शिक्षा-संस्कार की अनिवार्यता, सामाजिक सद्भाव और सेवा भाव जैसे बिंदु जुड़े हैं। भारत की आत्मा उसकी संस्कृति और परंपरा में है। यदि नई पीढ़ी इन मूल्यों को आत्मसात करेगी तो अगले तीन दशकों में भारत न केवल आर्थिक महाशक्ति बनेगा, बल्कि दुनिया का मार्गदर्शक भी होगा। आज भी संघर्ष जारी है, मगर हमें विश्वास है, भारत विश्वगुरु बनेगा और मानवता को नई दिशा देगा। मतलब साफ है डॉ. मोहन भागवत के विचार और संघ की शताब्दी वर्ष की व्याख्यान माला से स्पष्ट होता है कि संघ समय के अनुसार अपनी कार्यशैली और दृष्टिकोण में बदलाव ला रहा है। यह बदलाव संगठनात्मक शक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज के नैतिक, सांस्कृतिक और वैचारिक विकास पर केंद्रित है। संघ का समावेशी दृष्टिकोण, सामाजिक समरसता और राष्ट्र निर्माण की दिशा में योगदान आज अत्यंत प्रासंगिक है। समाज में एकजुटता, नैतिकता और समावेशिता से ही राष्ट्र सशक्त और आत्मनिर्भर बन सकता है। शताब्दी वर्ष का यह संदेश न केवल संघ के स्वयंसेवकों के लिए प्रेरणादायक है, बल्कि पूरे देश के नागरिकों के लिए मार्गदर्शक है। राष्ट्र निर्माण केवल राजनीतिक निर्णयों या सत्ता संघर्ष से नहीं होता, बल्कि समाज के प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी, जागरूकता और सक्रिय भागीदारी से संभव है। या यूं कहे आरएसएस और डॉ. मोहन भागवत की यह यात्रा भारतीय समाज के समग्र विकास, सांस्कृतिक जागरूकता और राष्ट्र निर्माण की दिशा में प्रेरणादायक मार्गदर्शन प्रस्तुत करती है

शिक्षा का असली अर्थः संस्कार और आत्मगौरव

भागवत ने शिक्षा को केवल साक्षरता नहीं, बल्कि “मनुष्य निर्माण” बताया। उन्होंने कहा, सच्ची शिक्षा से इंसान विष को भी अमृत बना सकता है। बच्चों को तकनीक का उपयोग करना आना चाहिए, लेकिन तकनीक मालिक न बने। शिक्षा का उद्देश्य नौकरी नहीं, बल्कि मनुष्य को मनुष्य बनाना है। उन्होंने इतिहास और परंपरा से जुड़ाव को जरूरी बताते हुए कहा कि बच्चों के भीतर गौरव और आत्मविश्वास तभी आएगा जब वे जानेंगे कि भारत की जड़ें कितनी गहरी हैं।

हिंदू राष्ट्र का मतलबः सबका सम्मान, सबका विकास

भागवत ने साफ किया कि हिंदू राष्ट्र की अवधारणा को लेकर फैलाई गई भ्रांतियां गलत हैं। “हिंदुत्व का मतलब संकीर्णता नहीं, बल्कि सेवा, सत्य और करुणा का मार्ग है। हमारे धर्म अलग हो सकते हैं, मगर समाज के नाते हम सब एक हैं। यही एकता भारत को विश्वगुरु बनाएगी।” भागवत का यह बयान सबसे ज्यादा चर्चा में रहा, “भारतीय परिवारों को कम से कम तीन बच्चे पैदा करने चाहिए।” इस पर सामाजिक हलकों में बहस छिड़ गई। कुछ ने इसे 145 करोड़ की आबादी वाले देश के लिए चुनौती बताया, तो समर्थकों ने इसे हिंदू समाज की जनसंख्या संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता बताया। 75 वर्ष की उम्र पूरी करने के बाद उनके “सेवानिवृत्त” होने की चचाओं पर उन्होंने कहा, ना तो मैं रिटायर होऊंगा और ना ही किसी और को कहूंगा। मैं 75 के बाद भी काम करने के लिए तैयार हूं।

विश्वगुरु का मार्गः शिक्षा, सेवा और आत्मगौरव

संघ प्रमुख ने कहा कि भारत का लक्ष्य केवल आर्थिक ताकत बनना नहीं है। असली लक्ष्य है, नई पीढ़ी को मूल्य आधारित शिक्षा देना, समाज में सद्भाव और एकता स्थापित करना, तकनीक को मानवता की सेवा में लगाना, आत्मगौरव और आत्मविश्वास को जगाना. हमको केवल राज्य नहीं चलाना है, हमें प्रजापालन करना है। उसके लिए आने वाली दो-तीन पीढ़ियों को बनाना होगा। तभी भारत विश्वगुरु बनेगा।

अफजाल का मकसद राजनीतिक संतुलन साधना

पूर्वांचल की राजनीति हिंदू-मुस्लिम संतुलन पर टिकी है। तारीफ करके अफजाल अंसारी यह संदेश देना चाहते हैं कि वे केवल मुस्लिम वोट बैंक तक सीमित नहीं हैं। अंसारी परिवार की छवि अक्सर विवादों से जुड़ी रही है। संघ या हिंदुत्व की तारीफ से वे सकारात्मक और सर्वसमावेशी चेहरा दिखाना चाहते हैं। मौजूदा दौर में बीजेपी-आरएसएस का प्रभाव बहुत बड़ा है। तारीफ करके वे सत्ता से सीधा टकराव टालना चाहते हैं। गाजीपुर और पूर्वांचल में बड़ी संख्या में हिंदू मतदाता हैं। इस बयान से वे उन्हें भी संदेश देना चाहते हैं। यह भी संकेत हो सकता है कि अंसारी आने वाले चुनावी समीकरणों और गठबंधनों को ध्यान में रखकर अपनी पोजिशनिंग बदल रहे हैं। कुल मिलाकर, अफजाल अंसारी की तारीफें सिर्फ. औपचारिक नहीं, बल्कि संतुलन साधने और भविष्य की राजनीति को ध्यान में रखकर दी गईं रणनीतिक टिप्पणियां मानी जा रही हैं।

राहुल के मंच से अखिलेश ने साधा यूपी, तेजस्वी को सीएम चेहरा बनाकर खेला बड़ा दांव

-अजय कुमार

बिहार की सियासत इस समय चुनावी गर्माहट के दौर से गुजर रही है। विधानसभा चुनाव की तारीखों का ऐलान अभी भले ही नहीं हुआ है, लेकिन पूरे राज्य में चुनावी माहौल अपने चरम पर है। इस माहौल को और तेज करने का काम राहुल गांधी और तेजस्वी यादव की निकाली गई 'वोटर अधिकार यात्रा' ने कर दिया है। 17 अगस्त को सासाराम से शुरू हुई यह यात्रा लगभग 16 दिनों तक बिहार की सड़कों पर चलती रही और 23 जिलों के करीब 1300 किलोमीटर का सफर तय करने के बाद 1 सितंबर को पटना में भव्य समापन के साथ समाप्त हुई। इस यात्रा का मकसद सिर्फ भीड़ जुटाना या रैलियां करना नहीं था, बल्कि यह सीधे तौर पर मतदाता सूची में गड़बड़ियों और मताधिकार को लेकर चुनाव आयोग पर दबाव बनाने की कवायद के रूप में पेश की गई। विपक्ष ने इसे लोकतंत्र बचाने की कवायद बताया तो सत्तारूढ़ एनडीए ने इसे जनता को गुमराह करने वाला अभियान कहा। लेकिन इन आरोप-प्रत्यारोपों से इतर यह तय है कि इस यात्रा ने बिहार की सियासी फिजा में एक नया रंग भर दिया है।

यात्रा की सबसे बड़ी खासियत यह रही कि इसमें कांग्रेस और आरजेडी के साथ-साथ समाजवादी पार्टी और झारखंड मुक्ति मोर्चा जैसे दलों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। यात्रा के अंतिम दिन पटना में हुए समापन समारोह में राहुल गांधी और तेजस्वी यादव के साथ अखिलेश यादव भी मौजूद थे। अखिलेश की मौजूदगी ने इस यात्रा को बिहार की राजनीति के साथ-साथ उत्तर प्रदेश की राजनीति से भी जोड़ दिया। अखिलेश यादव ने खुले मंच से तेजस्वी यादव को महागठबंधन का मुख्यमंत्री उम्मीदवार घोषित करने का समर्थन किया। उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि बिहार में तेजस्वी यादव से बेहतर मुख्यमंत्री कोई नहीं हो सकता और वह हमेशा तेजस्वी के साथ खड़े रहेंगे। यह बयान न केवल बिहार की राजनीति को प्रभावित करता है बल्कि यूपी की राजनीति के लिए भी एक संकेत है।

दरअसल कांग्रेस और आरजेडी के बीच मुख्यमंत्री पद को लेकर स्थिति अभी साफ नहीं है। कांग्रेस लगातार इस सवाल पर चुप्पी साधे हुए है कि महागठबंधन की ओर से सीएम चेहरा कौन होगा। तेजस्वी यादव ने कई बार राहुल गांधी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बताया, लेकिन कांग्रेस ने कभी यह नहीं कहा कि वह तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री उम्मीदवार मानती है। इस असमंजस की स्थिति में अखिलेश यादव का तेजस्वी के समर्थन में आना राहुल गांधी और कांग्रेस पर दबाव बनाने जैसा है। राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि अखिलेश का यह कदम सिर्फ बिहार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह 2027 में उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव के लिए भी एक संकेत है। अखिलेश जानते हैं कि जिस तरह कांग्रेस ने बिहार में सीएम चेहरे पर सस्पेंस रखा है, वैसा ही कुछ यूपी में भी हो सकता है। इसलिए उन्होंने पहले ही अपना पत्ता खोल दिया ताकि कांग्रेस भविष्य में किसी तरह का राजनीतिक दांव न खेल सके। 'वोटर अधिकार यात्रा' के दौरान जनता का जो उत्साह देखने को मिला, उसने विपक्ष को नई ताकत दी। पटना में यात्रा के समापन मौके पर 'गांधी से अंबेडकर मार्च' आयोजित किया गया, जिसमें राहुल गांधी, तेजस्वी यादव, अखिलेश यादव, झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, टीएमसी के नेता और पूर्व क्रिकेटर यूसुफ पठान समेत कई विपक्षी नेता शामिल हुए। यह मार्च गांधी मैदान से शुरू होकर अंबेडकर पार्क तक पहुंचा। इस यात्रा और मार्च के जरिए विपक्ष ने यह संदेश देने की कोशिश की कि वह सिर्फ चुनावी गठजोड़ तक सीमित नहीं है, बल्कि लोकतंत्र की रक्षा और मतदाताओं के अधिकारों की सुरक्षा के लिए भी एकजुट है।

इस यात्रा का एक बड़ा राजनीतिक नतीजा यह भी रहा कि कांग्रेस को बिहार में अपनी 'बर्गेनिंग पावर' बढ़ाने का मौका मिला। अब तक महागठबंधन में कांग्रेस को अक्सर राजद की बी-टीम कहा जाता रहा है, लेकिन इस यात्रा ने कांग्रेस को भीड़ जुटाने और एजेंडा सेट करने की ताकत दिखाई। राहुल गांधी के भाषणों में लगातार 'वोट चोरी' और 'लोकतंत्र बचाओ' का मुद्दा रहा, जिससे यह संदेश गया कि कांग्रेस सिर्फ सहयोगी नहीं बल्कि नेतृत्वकारी भूमिका निभाने का दावा कर रही है। यह बात आरजेडी और कांग्रेस दोनों के रिश्तों में नया समीकरण गढ़ सकती है।

हालाँकि यात्रा विवादों से भी अछूती नहीं रही। दरभंगा में यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी मां को लेकर की गई विवादित टिप्पणी ने राजनीतिक माहौल को गरमा दिया। भाजपा ने इसे विपक्ष की हताशा करार दिया और कहा कि महागठबंधन का कोई नेता सीएम का चेहरा घोषित नहीं कर पा रहा क्योंकि तेजस्वी यादव भ्रष्टाचार के मामलों में आरोपी हैं और एजेंसियां जांच कर रही हैं। डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी ने कहा कि राहुल गांधी की चुप्पी इस बात का सबूत है कि महागठबंधन अंदरूनी विरोधाभासों से घिरा हुआ है। वहीं विपक्षी खेमे का दावा है कि जनता अब पूरी तरह उनके साथ है। तेजस्वी यादव ने कहा कि जैसे यूपी में अखिलेश यादव ने बीजेपी के '400 पार' के नारे को आधे पर रोक दिया, वैसे ही बिहार में भी विपक्ष मिलकर बीजेपी को रोक देगा। उन्होंने यह भी कहा कि बिहार की जनता जागरूक है और इस बार वोट की ताकत से सत्ता परिवर्तन करेगी। राहुल गांधी ने भी कहा कि यह यात्रा बिहार की जनता के हक की लड़ाई है और अब जनता ही तय करेगी कि लोकतंत्र की रक्षा कैसे करनी है।

अगर इस यात्रा को व्यापक दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह सिर्फ बिहार तक सीमित नहीं है। यह विपक्ष के लिए एक प्रयोगशाला की तरह है। कांग्रेस, राजद, सपा और झामुमो जैसे दल इस यात्रा के जरिए अपने मतदाताओं को यह दिखाना चाहते हैं कि वे सिर्फ गठबंधन की राजनीति नहीं कर रहे बल्कि जनता के अधिकारों के लिए भी संघर्षरत हैं। दूसरी ओर भाजपा इसे सिर्फ चुनावी नौटंकी बताकर खारिज करने में लगी है। लेकिन यह इनकार नहीं किया जा सकता कि इस यात्रा ने विपक्ष को एकजुटता का मंच जरूर दिया और भीड़ ने यह साबित किया कि विपक्ष का संदेश जनता तक पहुंच रहा है।

अब सवाल यह है कि क्या यह भीड़ वोट में तब्दील होगी? राजनीतिक इतिहास बताता है कि भीड़ जुटाना और वोट पाना, दोनों अलग-अलग बातें हैं। बिहार में जातिगत समीकरण और स्थानीय मुद्दे अभी भी सबसे अहम भूमिका निभाते हैं। आरजेडी का यादव-मुस्लिम समीकरण, कांग्रेस का पारंपरिक वोट बैंक, सपा का सीमित प्रभाव और झामुमो की मौजूदगी ये सब मिलकर चुनाव में कितना असर डालेंगे, यह कहना अभी मुश्किल है। लेकिन यह तय है कि इस यात्रा ने चुनावी नैरेटिव को बदलने का काम किया है। अब चुनाव सिर्फ विकास या रोजगार के मुद्दे पर नहीं, बल्कि मताधिकार और लोकतंत्र की रक्षा जैसे संवेदनशील मुद्दों पर भी लड़ा जाएगा।

कांग्रेस और राजद की इस जोड़ी ने अपने अभियान से भाजपा पर दबाव जरूर बढ़ाया है, लेकिन भाजपा का संगठनात्मक ढांचा और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का अनुभव अभी भी महागठबंधन के लिए बड़ी चुनौती है। भाजपा लगातार यह संदेश देने की कोशिश कर रही है कि विपक्ष सिर्फ परिवारवाद और भ्रष्टाचार की राजनीति करता है, जबकि एनडीए विकास और सुशासन का मॉडल लेकर चुनाव मैदान में उतरेगा।

आखिरकार, बिहार की इस 'वोटर अधिकार यात्रा' ने यह साफ कर दिया है कि विधानसभा चुनाव अब सीधी टक्कर का रूप ले चुके हैं। एक तरफ एनडीए अपने मजबूत संगठन और शासन के अनुभव पर भरोसा कर रहा है, तो दूसरी तरफ महागठबंधन अपने जनसमर्थन और एकजुटता का प्रदर्शन कर रहा है। राहुल गांधी और तेजस्वी यादव की जोड़ी के साथ अखिलेश यादव की मौजूदगी ने इस टक्कर को और रोचक बना दिया है। आने वाले दिनों में यह साफ हो जाएगा कि यात्रा की यह सियासी ऊर्जा वास्तविक वोटों में तब्दील होती है या नहीं, लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि इसने बिहार की राजनीति को नई दिशा देने का काम किया है और 2025 के विधानसभा चुनाव अब पहले से कहीं ज्यादा दिलचस्प हो गए हैं।

राज पुरोहित दिल्ली में मुंबई का प्रतिनिधित्व करें : राहुल नार्वेकर

मुंबई (उत्तरशक्ति)। राज पुरोहित के ६९वां जन्मदिन यादगार बनाने के लिए उन्हें क्षेत्रीय कार्यकर्ता एवं समाज के प्रबुद्ध लोगों व बंधुओं के साथ हर्ष और उल्लास के साथ मनाया। जन्मदिन के कार्यक्रम के पूर्व में उन्हे केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने बधाई दी और मंत्री महाराष्ट्र सरकार आशिष शेलार, मुम्बई प्रदेश भाजपा अध्यक्ष अमीत साटम, भाजपा नेता अमरजीत सिंह ने कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर ने सभा को संबोधित करते हुए राज पुरोहित द्वारा भारतीय जनता पार्टी को मुंबई में दृढ़ करने के लिए कार्यों की प्रसंसा की और अब समय आ गया हैं कि उन्हें आपनी कार्य कुशलता से केंद्र की मोदी सरकार के लिए भी अपना योग दान को बढ़ाना चाहिए। पुर्व विधायक एवं तेज-तर्रार नेता अतुल शाह ने उन दोनों द्वारा जयवंतीबेन मेहता के लोकसभा चुनाव के दौरान किए हुए कार्यों से सभा को अवगत कराया गया। कार्यक्रम कि सुरुआत केक काट कर किया गया जिसमें उनकी पत्नी राधा, पुत्र नगरसेवक आकाश व पुत्रवधू हेमा सम्मिलित हुई। सभा को पुर्व नगरसेवक भरत गुर्जर, पुर्व नगरसेविका रिटा मकवाना, कार्यसम्राट नगरसेवक आकाश राज पुरोहित ने भी संबोधित कर

राज पुरोहित के कार्यों की तारीफ की और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। इसी कार्यक्रम के दौरान ललित शक्ति के मुंबई राजस्थान विशेषांक 2025 का भी विमोचन राज पुरोहित, राजस्थान प्रेस क्लब के जगदीश पुरोहित, अशोक तवरेचावोरा, प्रकाश जैन व सरदार एस. पी. आहूजा के हाथों हुआ। जन्मदिन की बधाई देनेवालों में जितेंद्र मेहता - वरिष्ठ उपाध्यक्ष क्रेडाई एमसीएचआय, सी. सी. डांगी - अध्यक्ष, भारत जैन महामंडल, रतन सिंह राठौड - संरक्षक, राजस्थान राजपूत परिषद, आदर्श होटल परिवार के जगदीश पुरोहित, हुकमसिंह खिंचन झ अध्यक्ष, राजपुरोहित गुरूसेवा संस्थान, अजयराजी समाजसेवी, राजपुरोहित समृद्धि फाउंडेशन के नटवरभाई पोसिंतरा, मामा आश्विन शेठ, राहुल जैरण, गणपतसिंह खीरोड़ी, सुरेश पादिव, तुलसी राम कैलाशनगर, आर.पी. सी के जितेंद्रसिंह राठोड व सुरेश भंसाली, किरण जैन एम.के.शाह के साथ कई गणमान्य लोगों ने बधाई दी। जूनियर जॉनी लीवर रमेश कुमार के शानदार ऑर्केस्ट्रा द्वारा प्रस्तुत संगीत व नृत्य ने भी पधारे हुए लोगों में आनंद की लहर भर दी। मंच का संचालन प्रेम शंकर पांडे, विश्वास म्हांबरे व जसवंत सिंह राठोड ने किया।

राजस्थान के एवं राजपुरोहित समाज के सोहन सिंह गुडाजेतसिंह, कानसिंह तीवरी, मदनसिंह गुडलाई, खंगारजी पुरोहित, अनोपसिंह देवल, मेहबूब खेरवा, मनोज दासपा उधोगपति, किरण सी.ए., किरण नवी मुंबई, प्रताप दाता, गणपत किरोड़ी, नरेन्द्र चौधरी, धुकसिंह कारोला, एड. एम डी माली, एड. जसराज परमार, अमरसिंह शर्मा, रामदास गिते, रघुनाथ सिंह भायल, अशोक जैन, प्रकार जैन, भावोश चौधरी, कांतिलाल सारीयाणा, नथुलाल चौरसिया, नरेंद्र ठाकुर, प्रेरणा सिरोहीया, अलका जैन, राजीव शाह, हरेश शाह ने भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

गणपति बप्पा के दरबार में जमीं कवियों की महफिल

भायंदर (उत्तरशक्ति)। महाराष्ट्र समेत पूरे देश में चल रहे गणेशोत्सव के बीच 31 अगस्त की शाम को कृष्णा क्लासेस के संचालक प्रोफेसर विजयनाथ मिश्रा के जेसल पार्क स्थित आवास पर स्थापित गणपति बप्पा के सामने एक दर्जन से अधिक कवियों ने काव्य पाठ किया। पूरी तरह से धार्मिक वातावरण में आयोजित काव्य गोष्ठी में सभी कवियों ने अपनी-अपनी स्वरचित कविताओं के माध्यम से गणेश वंदना की। काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार डॉ सुधाकर मिश्रा ने की। काव्य पाठ करने वाले कवियों में डॉ कृपाशंकर मिश्रा, डॉ उमेश चंद्र शुक्ला, डॉ मुरलीधर पांडे, मारकंडे त्रिपाठी, अवधेश विश्वकर्मा, उपेंद्र पांडे, पंडित राम व्यास ,अमर द्विवेदी, अजीत सिंह, माताकृपाल उपाध्याय, शिवपूजन सिंह आदि का समावेश रहा। इस अवसर पर वरिष्ठ अधिवक्ता हरिराम शर्मा राम भवन त्रिपाठी, इंद्रभान सिंह दिनेश दुबे, सुशील त्रिपाठी, समाजसेवी अशोक मिश्रा राम कथा पांडे समेत अनेक लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ पत्रकार शिवपूजन पांडे ने किया। अंत में ओंकार नाथ मिश्रा और श्रीमती रीता मिश्रा ने समस्त लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया।

श्री एल आर तिवारी इंजीनियरिंग कॉलेज ने पूरा किया शानदार 15 साल

भायंदर (उत्तरशक्ति)। देश के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान राहुल एजुकेशन द्वारा संचालित श्री एल आर तिवारी कॉलेज ने आज शानदार 15 साल पूरा किया। वर्ष 2010 में लल्लन तिवारी ने मध्यम वर्ग के परिवारों के बच्चे भी इंजीनियर बन सके, इस सोच के साथ मीरा रोड में इस कॉलेज की स्थापना की। कॉलेज लगातार प्रगति के पथ पर तेजी से आगे बढ़ रहा है। कॉलेज से पढ़े हुए विद्यार्थी विदेशों में भी बड़े पदों पर काम कर रहे हैं। कॉलेज के 15 साल पूरा होने पर राहुल एजुकेशन के चेयरमैन लल्लन तिवारी तथा सचिव राहुल तिवारी ने कॉलेज के सभी सहायक प्रोफेसर का सम्मान करते हुए उन्हें बधाई दी। लल्लन तिवारी ने कहा कि यह कॉलेज के सभी स्टाफ की मेहनत और कर्तव्य का प्रतिफल है कि कॉलेज की लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है। इस अवसर पर सहायक प्रोफेसर जैनब मिजवान, सौम्या फिलिप, डॉ करुणा भोले, डॉ प्रवीण जांगिड़, रीना कोठारी तथा डॉ उषा बाग के अलावा प्रबंधक देवासीश साहा, प्रशासक प्रमुख श्रीदेवी एमएन, निदेशक डॉ मयूर दुबे, आरजीएस जूनियर कॉलेज प्रमुख विकास तिवारी तथा सुशील कुमार सिंह उपस्थित रहे।

एकनाथ म्हात्रे के घर गौरी गणपति का पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया

कल्याण (उत्तरशक्ति)। कल्याण पूर्व में चिंचपाड़ा गांव के वरिष्ठ समाजसेवी और उद्योजक एकनाथ म्हात्रे के आवास पर गौरी का आगमन हो चुका है, और सोमवार को गौरी पूजन भी किया गया। पिछले अनेक सालों से एकनाथ म्हात्रे के घर गौरी गणपति का पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस साल भी गणपति भगवान और गौरी की सुंदर मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा की गई है। वहीं गौरी गणपति के सिंहासन को आकर्षक फूलों से सजाया गया है। इस दौरान गौरी गणपति के दर्शन के लिए चिंचपाड़ा गांव में बड़ी संख्या में भक्त जन तथा एकनाथ म्हात्रे के मित्र-संबंधियों का तांता लगा रहा । वहीं एकनाथ म्हात्रे ने सभी गांव वासी और शहर के नागरिकों की खुशहाली के लिए गणपति बाप्पा से प्रार्थना की।

कृति सेनन बनी कैंपस एक्टिववियर की वुमेन्स कैटेगरी का नया चेहरा

मुंबई/ पटना। भारत के अग्रणी स्पोर्ट्स एवं एथलेजर फुटवियर ब्राण्ड्स में से एक कैंपस एक्टिववियर ने राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता अभिनेत्री कृति सेनन को अपनी वुमेन्स कैटेगरी का नया चेहरा बनाया है। यह केवल एक ब्रांड और सेलिब्रिटी के बीच हुई एक साझेदारी नहीं, बल्कि यह कैंपस के उस विजन को मजबूती प्रदान करता है जिसमें वह भारत की महिलाओं के फुटवियर सेगमेंट का भविष्य गढ़ने के लिए प्रतिबद्ध हैं। कैंपस द्वारा पिछले वर्ष दर्ज की गई मजबूत वृद्धि इस दिशा में उसकी राह को और सशक्त बनाती है। कृति सेनन को निडरता के साथ करियर के विकल्प चुनने और कई भुमिकाओं के बीच आसानी से तालमेल बनाने की क्षमता के लिए जाना जाता है- वे आज के दौर की गतिशील, महत्वाकांक्षी और निडर महिलाओं की भावनाओं का प्रतीक हैं। एक इंजीनियरिंग ग्रेजुएट से लेकर भारत की सबसे मशहूर अभिनेत्रियों एवं महिला उद्यमियों में शुमार होने तक की यात्रा, उनके दृढ़ इरादे, व्यक्तित्व एवं शैली को अभिव्यक्त करती है। वे महिलाओं को अपने पसंदीदा रास्तों को चुनने के लिए प्रेरित करती हैं, फिर चाहे जीवन हो या फैशन।

डीसीपी अतुल झेंडे के मार्गदर्शन में पुलिस का रुट मार्च

कल्याण (उत्तरशक्ति)। गणेशोत्सव और ईद-ए-मिलाद को लेकर कल्याण में पुलिस विभाग अलर्ट मोड पर आ गया है। सोमवार को डीसीपी अतुल झेंडे के मार्गदर्शन में पुलिस ने रुट मार्च किया। कल्याण के एसीपी कल्याणजी घेटे सहित बड़ी संख्या में पुलिस अधिकारी और कर्मचारी रुट मार्च में मौजूद रहे।

बतादें कि गणेशोत्सव और ईद-ए-मिलाद को देखते हुए शहर में न्याय-व्यवस्था बनी रही है और किसी प्रकार की कोई गड़बड़ी ना हो इसलिए पुलिस ने रुट मार्च कर नागरिकों को सुरक्षा का अहसास दिलाया। कल्याण पश्चिम के सहजानंद चौक से शुरू होकर, छत्रपति शिवाजी महाराज चौक, शंकरराव चौक, अत्रे रंग मंदिर, गांधी चौक, पारनाका से होते हुए दुगार्डी गणेश घाट पर रुट मार्च समाप्त हुआ। रुट मार्च के जरिए पुलिस ने सुरक्षा का जायजा लिया।

महारक्तदान शिविर में 507 रक्तदाताओं ने किया रक्तदान, रक्तदाताओं का 10 लाख रुपये का किया गया दुर्घटना बीमा

आचार्य सूरजपाल यादव

भिवंडी (उत्तरशक्ति)। भिवंडी में 'एकत्मता चा राजा' के रूप में मशहूर धामनकर नाका मित्र मंडल सार्वजनिक गणेशोत्सव के दौरान विभिन्न सामाजिक कल्याण कारी योजनाओं का आयोजन सदैव करते आ रहे हैं वहीं यह त्योहार धार्मिक उत्सव के साथ सामाजिक कार्य करने वाले गणेशोत्सव के रूप में जाना जाता है। धामनकर नाका मित्र मंडल के संस्थापक अध्यक्ष संतोष शेट्टी की संकल्पना से पिछले छह वर्षों से गणेशोत्सव के दौरान महारक्तदान शिविर का आयोजन किया जाता है। इस बार मुंबादेवी ब्लड एंड थैलेसीमिया डे केयर सेंटर के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया था। सुबह के

सत्र में भारतीय सेना के सैनिकों और पूर्व सैनिकों ने सबसे पहले रक्तदान किया और शिविर का उद्घाटन संतोष शेट्टी ने किया। इस अवसर पर मंडल के प्रमुख पदाधिकारी हसमुख पटेल, दिलीप पोद्दार, मोहन बल्लेवार, आयोजन समिति के राकेश पटवारी, चंद्रकांत हेगड़े, भिवंडी वॉरियर्स ग्रुप के फूलसिंह सोलंकी, सूरज भागवत और उनके सैनिक साथी उपस्थित थे। शाम तक चले इस रक्तदान शिविर में 507 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया। खास बात यह रही है कि सभी रक्तदाताओं को धामनकर नाका मित्र मंडल की ओर से भारतीय डाक विभाग की ओर से 10 लाख रुपये का दुर्घटना बीमा उपहा स्वरूप देकर सम्मानित किया गया है। इस अनूठी अवधारणा के कारण इस रक्तदान शिविर को रक्तदाताओं का भारी प्रतिसाद मिला है जिसमें महिलाओं ने भी बड़ी संख्या में भाग लिया। सरकार की कई कल्याणकारी योजनाएं आम जनता तक नहीं पहुंच पाती हैं। मंडल ने इस रक्तदान शिविर के माध्यम से जहां रक्तदाताओं के लिए दुर्घटना बीमा निकाला वहीं इस माध्यम से डाकघर में उनके बैंक खाते भी खोले गए हैं।

भाजपा नेता राजकुमार मिश्रा के घर पर स्थापित बप्पा का दर्शन करने पहुंचे गणमान्य

भायंदर(उत्तरशक्ति)। विगत वर्षों की तरह इस वर्ष भी युवा भाजपा नेता एडवोकेट राजकुमार मिश्रा के घोड़देव गांव स्थित न्यू साई चरण परिसर स्थित आवास पर स्थापित गणपति बप्पा का दर्शन करने के लिए समाज और राजनीति से जुड़े अनेक गणमान्य लोगों का आगमन हुआ। बप्पा का दर्शन करने वाले प्रमुख लोगों में राहुल एजुकेशन के चेयरमैन लल्लन तिवारी, महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री रमेश दुबे, विधायक नरेंद्र मेहता, राहुल तिवारी, जौनपुर के भाजपा नेता अजय दुबे उर्फ अज्जू भईया, भाजपा नेता विनोद मिश्रा, उप महापौर हसमुख गहलोत, भाजपा जिलाध्यक्ष दिलीप जैन, उत्तर भारतीय मोर्चा के जिलाध्यक्ष सुरेश सिंह, समाजसेवी

धर्मेंद्र चतुर्वेदी, परशुराम सेना के राष्ट्रीय संरक्षक अरविंद उपाध्याय , मंडल अध्यक्ष रथीन दत्ता, भाजपा प्रदेश प्रवक्ता शैलेश पांडे, नगरसेवक मनोज दुबे, एडवोकेट डीके पांडे, बृजेश तिवारी, उद्योगपति नितिन तिवारी, महेश म्हात्रे, चंद्रकांत मोदी, उमेश यादव, कैलाश यादव,पूर्व नगरसेवक हंसूकुमार पांडेय, राहुल दुबे, योगिता शर्मा, प्रोफेसर हरि प्रसाद पाठक, वीरेंद्र पाठक, रवि मिश्रा, प्रदीप मिश्रा, अजय सिंह, वीरेंद्र सिंह, राकेश तिवारी, संजय दुबे, पत्रकार अरुण उपाध्याय, शिवपूजन पांडे, राजेश उपाध्याय, विजय गिरी, रविंद्र उपाध्याय, अनिल चौहान आदि का समावेश रहा। राजकुमार मिश्रा के बड़े भाई मनोज मिश्रा और अजय मिश्रा ने अतिथियों का स्वागत और सम्मान किया।

गणेशोत्सव पर स्वामी भारतानंद सरस्वती का संदेश, गजानन मित्र मंडल ने किया बप्पा की विदाई

पालघर(उत्तरशक्ति)। जिले के बोईसर शहर (पूर्व) के यादव नगर स्थित गजानन मित्र मंडल, राधाकृष्ण चॉल में इस वर्ष भी आस्था और श्रद्धा के साथ गौरी-गणेश की पांच दिवसीय स्थापना कर भव्य गणेशोत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम, बच्चों की स्पधाएं तथा भजन-कीर्तन और संकीर्तन जैसे धार्मिक आयोजन हुए। रविवार 31 अगस्त को हवन-पूजन के साथ गणेशोत्सव का समापन और बप्पा की विदाई धूमधाम से संपन्न हुई।

समापन अवसर पर हिंदू शक्ति पीठ पालघर के संस्थापक स्वामी भारतानंद सरस्वती महाराज ने उपस्थित भक्तों और युवाओं को

संबोधित किया। उन्होंने राष्ट्रप्रेम का भाव जगाते हुए मातृ-पितृ सेवा, गौ-रक्षा और समाज में फैल रही कुरीतियों से दूर रहने का संदेश दिया। स्वामी जी ने युवतियों को धर्मांतरण की साजिशों से सतर्क रहने और वीरांगना बनने का आह्वान किया। साथ ही समाज में बढ़ रही लव जिहाद, अश्लील रिल्स और लालच में धर्म परिवर्तन जैसी प्रवृत्तियों पर चिंता जताते हुए गर्व से कहो हम हिंदू हैं का मंत्र दिया। गणेशोत्सव के आयोजन में सामाजिक कार्यकर्ता चंद्रबली यादव, सूरज प्रजापति, कमलेश गुप्ता, लवकुश यादव, लोरिक यादव, रंजित वर्मा, संतोष यादव, अशोक यादव, सोना सेठ, रामबरन शर्मा, विनोद मौर्या सहित अनेक कार्यकताओं का सराहनीय योगदान रहा।

पास्थल में इंद्रप्रस्थ के राजा को पांचवे दिन दी गई भावपूर्ण विदाई

पालघर(उत्तरशक्ति)। जिलेभर में प्रथम पूजनीय मंगलकारी गणेश भगवान की प्रतिमाओं का पांचवें दिवस, रविवार 31 अगस्त को भक्तिमय वातावरण में विसर्जन किया गया। ह्यमंगलमूर्ति मोरया, अगले बरस तू जल्दी आह्व के जयघोष के बीच नदी और तालाबों में पुलिस की सुरक्षा व्यवस्था के बीच श्रद्धालुओं ने अपने आराध्य बप्पा को भावपूर्ण विदाई दी। पालघर जिले के बोईसर शहर (प.) पास्थल स्थित इंद्रप्रस्थ ऑटो एंड सर्विस (इंडियन ऑयल पेट्रोल पंप व सीएनजी) के पंडाल में इस वर्ष भी बड़े हर्षोल्लास के साथ इंद्रप्रस्थ के राजा की स्थापना की गई थी। पांचवें दिवस पुरोहित पं. कन्हैया दुबे द्वारा विधि-विधान से यजमान उत्तर क्षेत्रीय संस्था (रजि.) के अध्यक्ष

अरविंद सिंह क्षत्रिय व उनके परिवार सहित श्री सत्यनारायण भगवान की पूजा, मंगलआरती, हवन तथा महाभंडारे का आयोजन किया गया। इसके उपरांत क्षत्रिय परिवार ने उदास मन से वाणगंगा नदी तट पर बप्पा का जल प्रवाह कर अगले बरस तू जल्दी आ की प्रार्थना की। बप्पा की विदाई पूजा, मंगलआरती और महाभंडारे का प्रसाद ग्रहण करने के लिए बोईसर शहर के प्रमुख गणमान्यजन, उद्योजक, समाजसेवी और राजनेता बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। सभी ने बप्पा के चरणों में सुख-समृद्धि और जीवन से विघ्नों की मुक्ति के लिए आशीर्वाद मांगा।

युवा शक्ति सनातन संघ ने साईलोक नगर में किया स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

पालघर(उत्तरशक्ति)। युवा शक्ति सनातन संघ के तत्वावधान में बोईसर शहर के गणेश नगर, साई लोक नगर में साईलोक नगरचा विघ्नहर्ता पंडाल परिसर में सोमवार 1 सितंबर 2025 को स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर सुबह 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक चला।

जिला परिषद पालघर के स्वास्थ्य विभाग की ओर से दांडी पीएचसी के डॉ. आशीष उपाध्याय के नेतृत्व में बी.एफ., आशा सेविका और नर्सों की टीम ने सेवाएं दीं। वहीं, इंफिगो आय केयर हॉस्पिटल की ओर से नेत्र विशेषज्ञ समिधा तांबे व उनकी टीम में नितेश पाटील ने नेत्र परीक्षण किया। शिविर में आयुष्मान कार्ड भी बनाए गए।

शिविर का शुभारंभ बोईसर ग्राम पंचायत के उप सरपंच नीलम संखे ने नारियल तोड़कर किया। इस मौके पर पंचायत सदस्य अतुल देसाई, पंचायत समिति सदस्य अजय दिवे सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। स्वास्थ्य जांच शिविर को सफल बनाने में आनंद सिंह, प्रभात सिंह, सूरज पाल, धनंजय यादव, मुकेश चौहान,बहादुर, बादल, विकास, सूरज आदि का विशेष योगदान रहा।

सीआरआई पंप्स को एमएसईडीसीएल द्वारा 320 करोड़ रुपये का ऑर्डर मिला

मुंबई। नवीकरणीय ऊर्जा-संचालित जल समाधानों में अग्रणी सीआरआई पंप्स का एक प्रभाग सीआरआई सोलर को महाराष्ट्र राज्य विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड (एमएसईडीसीएल) द्वारा 'मागेल त्याला सौर कृषि पंप' योजना के तहत 320 करोड़ रुपये मूल्य के 3 एचपी, 5 एचपी और 7.5 एचपी क्षमता के 10,714 ऑफ-ग्रिड डीसी सौर फोटोवोल्टिक जल पंपिंग सिस्टम (एसपीडब्ल्यूपीएस) के डिजाइन, आपूर्ति, स्थापना और कमीशनिंग के लिए लेटर ऑफ एम्पैनलमेंट (एलओई) प्रदान किया गया है। एसपीडब्ल्यूपीएस में एक इनबिल्ट आईओटी-सक्षम रिमोट मॉनिटरिंग सिस्टम (आरएमएस) है और यह मरम्मत और रखरखाव को कवर करने वाली 5 साल की वारंटी के साथ आता है। इस पहल से अल्पसेवित और ऑफ-ग्रिड ग्रामीण क्षेत्रों में विश्वसनीय जल उपलब्धता सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी, जिससे पारंपरिक ऊर्जा पर निर्भरता में उल्लेखनीय कमी आएगी, सिंचाई विश्वसनीयता बढ़ेगी और कृषि उत्पादकता तथा ग्रामीण समृद्धि को बढ़ावा मिलेगा। परियोजना के क्रियान्वयन की शुरूआत एमएसईडीसीएल की निर्धारित समयसीमा के अनुसार होगा, जिसमें समय पर, कुशल और उच्च गुणवत्तापूर्ण कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए सी.आर.आई. सोलर को बड़े पैमाने पर सौर तैनाती में अपनी सिद्ध विशेषज्ञता का लाभ मिलेगा।

उत्तरशक्ति
* संपादकः ओमप्रकाश प्रजापति
* उप संपादकः प्रेम चंद मिश्रा
*प्रबंध संपादकः डा. शेषधर बिन्द
उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है।
पत्राचार कार्यालय :
उत्तरशक्ति (हिंदी दैनिक)
मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5, ए-337 ट्रक टर्मिनल डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल ऑटाफ हिल वडाला, मुंबई-37
मो.- 9554493941
email ID- uttarshaktinews@gmail.com

स्वामी: शरद फागूराम प्रजापति, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति द्वारा सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, यूनिट क्रमांक 4, तल मजला, एन.के. इंडस्ट्रियल स्टेट, आरे रोड, प्रवासी इंडस्ट्रियल एस्टेट, जवल, गेट क्रमांक 2, गोरेगांव (पूर्व), मुंबई-400063, महाराष्ट्र से मुदित एवं के-4, रूम नं. 8, ग्राउंड फ्लोर न्यू समता सहकारी को.ऑ. हां. सोसाइटी, एमएमआरडीए कॉलोनी कंजूरमार्ग (वेस्ट), जिला मुंबई- 400078, महाराष्ट्र से प्रकाशित। RNI NO. MAHHIN/2018/76092 * संपादक- ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति, समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के लिए उत्तरदाई तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद मुंबई न्यायालय के अधीन होंगे।
पत्राचार कार्यालय: मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5 ए-337 ट्रैक टर्मिनल, डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल, ऑटाफ हिल, वडाला मुंबई -37, मो.- 9554493941 email ID- uttarshaktinews@gmail.com

मॉर्निंग वॉक करने निकले अध्यापक को बाइक सवार अज्ञात बदमाशों ने मारी गोली, हुए घायल

गले से छीनी सोने की चेन

जौनपुर(उत्तरशक्ति)।कंधरपुर प्राइवेट हॉस्पिटल के समीप चली गोली। प्राइवेट हॉस्पिटल के सामने मॉर्निंग वॉक करने निकले संतोष यादव अध्यापक उम्र लगभग 40 वर्ष पता कंधरपुर जौनपुर को आज लगभग सुबह 5 से 6 बजे के बीच बाइक से आए बदमाश अध्यापक संतोष यादव के ऊपर गोली चलाए जिससे संतोष यादव के पैर में गोली मार दिए। गले में पहने सोने की चेन को जबर जस्ती छीन लिए, जिसकी सूचना मिलते ही लाइन बाजार थाना प्रभारी अपनी मय फोर्स टीम के साथ पहुंचे। सूचना मिलते ही क्षेत्राधिकारी देवेश सिंह मौके का निरीक्षण किए। घायल संतोष यादव को तत्काल जिला हॉस्पिटल में एडमिट कराया गया। संतोष यादव प्राथमिक विद्यालय उद्पुर बक्शा में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत है। इलाज के लिए अमर शहीद अमरनाथ सिंह जिला चिकित्सालय जौनपुर पहुंचे जहां पर जिला अस्पताल के डॉक्टर के द्वारा प्राथमिक उपचार किया गया। हालत गंभीर देखते हुए रेफर कर दिया गया। वही मौके पर थाना लाइन बाजार थाना अध्यक्ष अपनी मय टीम के साथ पीड़ित परिवार के साथ खड़े दिखाई दिए। संतोष यादव का कहना है कि रोज की तरह आज भी सुबह में मॉर्निंग वॉक के लिए गए हुए थे कि तभी पल्सर सवार दो बदमाश पहुंचे और मेरे गले की चेन को छीनने का प्रयास किए। संतोष के द्वारा बचाव करने पर पैर में गोली मार दिए। उसके बाद चेन छीन लिया। मौके पर पहुंची पुलिस जांच पड़ताल में जुटी है।

मकान मालिक पर 50 लाख की रंगदारी मांगने और धमकी देने का लगाया आरोप

लक्सा थाने में मुकदमा दर्ज, जाँच में जुटी पुलिस

वाराणसी(उत्तरशक्ति)। मुंबई के एक होटल व्यवसायी ने वाराणसी में मकान मालिक पर 50 लाख रुपए की रंगदारी मांगने का आरोप लगाते हुए लक्सा थाने में मुकदमा दर्ज कराया है।

पीड़ित का कहना है कि उसने छित्तूपुर क्षेत्र में होटल संचालन के लिए मकान किराए पर लिया था और 10 लाख रुपए अग्रिम किराया भी चुका दिया था, लेकिन अब तक कब्जा नहीं दिया गया। इसके उलट उससे रंगदारी की मांग और धमकी दी जा रही है।

पीड़ित बृजेश रामदुलार सिंह, जो मूल रूप से मुंबई के निवासी हैं, अपने मित्र श्याम कुमार चौरसिया (भदैनी निवासी) के साथ मिलकर वाराणसी में होटल का संचालन करते हैं। उन्होंने बताया कि 5 जुलाई 2023 को मकान मालिक पंकज कुमार भोला निवासी छित्तूपुर, महमूरगंज के साथ नोटेरियल इकरारनामा किया गया था। यह इकरारनामा 10 अक्टूबर 2023 तक के लिए था और उस दौरान 10 लाख रुपए किराए के रूप में दिए गए थे। व्यवसायी का आरोप है कि मकान मालिक ने न तो अब तक कब्जा दिया और अब 50 लाख की रंगदारी मांग रहा है। न देने पर फंसाने की धमकी भी दी जा रही है। शिकायत में यह भी आरोप लगाया गया है कि मकान मालिक अपने घर में अवैध गतिविधियों को बढ़ावा देता है।

पीड़ित का कहना है कि वह 18 जनवरी 2025 को ही मामले की शिकायत लेकर थाने पहुंचा था लेकिन सुनवाई नहीं हुई। इसके बाद पुलिस आयुक्त से शिकायत की, तब जाकर लक्सा थाने में संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया। लक्सा थाने के प्रभारी निरीक्षक दयाराम ने बताया कि पीड़ित की शिकायत पर बीएनएस की धारा 316(2) और 351(2) के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। जांच की जा रही है, जिसके बाद विधि सम्मत कार्रवाई की जाएगी।

जिलाधिकारी ने फरियादी राधेश्याम यादव को राजकीय वाहन से भेजकर एक घण्टे के भीतर बनवाया आधार कार्ड

त्वरित गति से सुनवाई होने पर मुख्यमंत्री और जिला प्रशासन को राधेश्याम ने दिया धन्यवाद

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। जिलाधिकारी डॉ0 दिनेश चन्द्र के समक्ष जनसुनवाई के दौरान फरियादी राधेश्याम यादव निवासी चक इंग्लिस हैदर हुसैन बरेठी विकास खण्ड बरसठी के द्वारा प्रार्थना पत्र के माध्यम से अवगत कराया कि वे दोनों आंख से दिव्यांग होने के साथ ही अत्यन्त गरीब है। उनके पास रहने के लिए आवास भी नही है। आवास और दिव्यांग पेन्शन के आवेदन के दौरान आधार कार्ड की मांग की जाती है आधार कार्ड न होने के कारण दिव्यांग पेंशन और मुख्यमंत्री आवास सहित अन्य सरकारी योजनाओं का लाभ नही ले पा रहे है। उक्त प्रार्थना पत्र को तत्काल संज्ञान में लेते हुए जिलाधिकारी के द्वारा फरियादी राधेश्याम यादव को राजकीय वाहन से भेजकर 01 घण्टे के भीतर आधार कार्ड बनवाते हुए नियमानुसार दिव्यांग पेंशन और मुख्यमंत्री आवास योजना का लाभ देने हेतु प्रक्रिया शुरू करा दी गयी। जिलाधिकारी ने राधेश्याम को अंगवस्त्रम प्रदान करते हुए हरसंभव मदद हेतु आश्वासन भी दिया। इसके साथ ही जिलाधिकारी के द्वारा राधेश्याम को इलेक्ट्रानिक ब्लाइन्ड स्टीक भी प्रदान किया गया और अंगवस्त्रम देकर सम्मानित भी किया गया। जिलाधिकारी ने बताया कि मुख्यमंत्री का स्पष्ट निर्देश है कि एसे प्रकरण में संवेदनशीलता के साथ त्वरित राहत दिलाई जाए। राधेश्याम के द्वारा त्वरित गति से सुनवाई होने पर मुख्यमंत्री और जिला प्रशासन को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस अवसर पर जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी दिव्या शुक्ला सहित अन्य उपस्थित रहे।

सर्पदंश से हुई खुशी की मौत पर राज्यमंत्री ने परिजनों से की मुलाकात, दिया आर्थिक सहायता का प्रमाण पत्र

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। विधानसभा क्षेत्र सदर के ग्राम नौली प्रभार) खेल एवं युवा कल्याण गिरीश चन्द्र यादव के द्वार नौली निवासी खुशी पुत्री नागेंद्र प्रसाद का विगत दिनों सर्प दंश से निधन हो गया था। आज राज्यमंत्री (स्वतन्त्र गांव जाकर शोकाकुल परिजनों से भेंट कर शोक संवेदनायें व्यक्त करते हुए सर्पदंश से मृतक खुशी की माता मनशउता पत्नी नागेंद्र को राज्य आपदा मोचक निधि के अंतर्गत रु. 4,00,000 (चार लाख) की आर्थिक सहायता का स्वीकृति प्रमाण पत्र दिया। राज्यमंत्री ने कहा कि इस दुख की घड़ी में शासन मृतक के परिजनों के साथ है, उन्हे हर सम्भव सहयोग और मदद प्रदान किया जाएगा। इस अवसर पर मण्डल अध्यक्ष अजय यादव, अजय सिंह, मनीष श्रीवास्तव, धर्मेंद्र मिश्रा, इंद्रजीत विश्वकर्मा, लखेंद्र राजभर, अमित राजभर सहित गणमान्य उपस्थित रहे।

पूरे सितम्बर माह बिना हेलमेट के नहीं मिलेगा पेट्रोल

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। प्रदेश में पहली सितम्बर से शुरू हो रहे 'नो हेलमेट नो फ्यूल अभियान' का संचालन अपने जनपद में भी किया जायेगा। पहली सितम्बर से तीस सितंबर तक चलने वाले इस अभियान में जो भी लोग पेट्रोल पम्प पर दो पहिया वाहनों से बिना हेलमेट के पेट्रोल लेने का प्रयास करेंगे उन्हें बैरंग वापस कर दिया जायेगा। पेट्रोल पम्पों पर ऐसा प्रतिबंध लोगों में हेलमेट पहनने की आदत विकसित करने के लिए किया जा रहा है। जनपद में भी सभी पेट्रोल पम्पों पर दो पहिया वाहन चलाने वाले लोगों के लिए पेट्रोल लेने के लिए जरूरी होगा कि वे हेलमेट पहनकर आयें। ए आर टी ओ प्रशासन सत्येंद्र कुमार ने शिराज ए हिंद डॉट कॉम को बताया कि इस अभियान के तहत जिले के सभी पेट्रोल पंप मालिकों के साथ बैठक करके उन्हें इसका कड़ाई से पालन करने का निर्देश दिया गया है। इसके अलावा मेरे निर्देशन में सभी पेट्रोल पंपों पर कड़ी निगरानी की जाएगी। आंकड़ों की मानें तो उत्तर प्रदेश के कुल पंजीकृत वाहनों में सबसे अधिक संख्या दो पहिया वाहनों की है। दो पहिया वाहनों में जितनी भी दुर्घटनायें होती हैं उनमें ज्यादातर लोगों की मृत्यु हेलमेट न लगाने के कारण सिर में चोट लगने के कारण हो जाती है। चालान से बचने के लिए कुछ लोग सस्ते हेलमेट पहनते हैं जो बी आई एस सर्टिफाइड नहीं होते हैं और दुर्घटना होने उचित सुरक्षा नहीं प्रदान कर पाते हैं।

किशोर ने खाया विषाक्त, हालत गम्भीर

विशाल सोनी, शाहगंज,जौनपुर(उत्तरशक्ति)। कोतवाली क्षेत्र के एक गॉव में एक किशोर ने विषाक्त पदार्थ खा लिया। जिससे उसकी तबियत बिगड़ गयी। जानकारी के अनुसार कोतवाली क्षेत्र के ग्राम उसरहटा में 17 वर्षीय ओवैस पुत्र गुलाम निवासी नोपैडवा निवासी जो अपने अपने ननिहाल उसरहटा में ही रहता है। बीती रात किसी बात से नाराज होकर घर मे रखा एक विषाक्त पदार्थ खा लिया। जिससे उसकी तबियत बिगड़ने लगी। परिजनों को पता चलने पर आनन फानन में उपचार हेतू सामुदायिक स्वास्थ केंद्र लाया गया जहां प्राथमिक उपचार के बाद हालत गम्भीर देखते हुए बेहतर इलाज हेतू जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया।

डॉ.राव ने मुख्यमंत्री योगी को अपने दिवंगत पति के.विक्रम राव द्वारा लिखित पुस्तकें भेंट की

लखनऊ (उत्तरशक्ति)। उत्तर प्रदेश के उत्तर-मध्य रेलवे की पूर्व मुख्य चिकित्सा निदेशक डॉ.के.सुधा राव ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान उनके साथ उनके बेटे और पत्रकार के.विश्वदेव राव भी थे। इस मुलाकात के दौरान, मुख्यमंत्री ने दिवंगत डॉ.के.विक्रम राव को भावभीनी श्रद्धांजलि दी और पत्रकारिता के क्षेत्र में उनके अमूल्य योगदान को सराहा। उन्होंने डॉ.सुधा राव और उनके परिवार के प्रति गहरी संवेदनाएं भी व्यक्त कीं। डॉ.राव ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को अपने दिवंगत पति द्वारा लिखित पुस्तकें भेंट कीं। उन्होंने मुख्यमंत्री से लखनऊ में एक औपचारिक कार्यक्रम में इन पुस्तकों का विमोचन करने का अनुरोध किया, जिस पर मुख्यमंत्री ने सहर्ष अपनी सहमति दी है।

जिलाधिकारी ने किया यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की सिविल लाइंस शाखा का औचक निरीक्षण

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। जिलाधिकारी डॉ0 दिनेश चंद्र द्वारा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की सिविल लाइंस शाखा का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी द्वारा वित्तीय समावेशन संतृप्तिकरण अभियान का जायजा लिया गया। शाखा में जो ग्राहक उपस्थित थे उन ग्राहकों से उन्होंने संवाद किया तथा जानकारी प्राप्त की कि उन्होंने सुरक्षा बीमा योजना हेतु नामांकन कराया है या नहीं। इसके साथ ही बैंक कार्मिकों से सभी खाताधारकों के प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना हेतु नामांकन कराने हेतु जागरूक करने की अपील भी की। इसी क्रम में शाखा प्रबंधक को आवश्यक निर्देश दिए गया बैंक के कर्मचारियों को भी आवश्यक निर्देश दिए और सुरक्षा बीमा और जीवन ज्योति बीमा योजना पर विशेष बल देते हुए प्रत्येक व्यक्ति को संतृप्तिकरण करने हेतु निर्देशित किया गया। साथ ही अग्रणी जिला प्रबंधक को यह निर्देश दिया गया कि अविलंब एक विशेष पत्र जारी करें जिसमें इस जनपद के शाखा के समस्त शाखा प्रबंधक और क्षेत्रीय प्रबंधक इस बात को सुनिश्चित करेंगे कि जीवन ज्योति सुरक्षा बीमा योजना और अटल पेंशन योजना से संतृप्त करते हुए प्रत्येक पात्र व्यक्ति को संतृप्त करना सुनिश्चित करेंगे।

श्री गणेश प्रतिमा का हुआ विसर्जन

मछ्लीशहर,जौनपुर (उत्तरशक्ति)। क्षेत्र के जमालपुर गांव में श्री जमालपुर गणेश पूजा समिति द्वारा आयोजित तीन दिवसीय गणेश पूजा का रविवार को मूर्ति विसर्जन के साथ संपन्न हो गया। भक्तों ने डीजे के साथ नाचते शोभायात्रा निकाल कर गणपति बप्पा को अगले बरस फिर आने के वादे के साथ विदाई दी। इससे पहले रात को जागरण हुआ। इस दौरान ग्रामीणों ने पंडाल में स्थापित गणपति बप्पा की पूजा-अर्चना की और क्षेत्र की खुशहाली, तरक्की व अच्छे स्वास्थ के लिए आशीर्वाद मांगा।

शिराज-ए-हिन्द जौनपुर की सरजमीं हमेशा से गंगा-जमुनी तहजीब की नायाब मिसाल रही है: शाहनवाज मंजूर

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। शिराज-ए-हिन्द जौनपुर की सरजमीं हमेशा से इल्म-ओ-अदब, मोहब्बत-ओ-आमान और गंगा-जमुनी तहजीब की नायाब मिसाल रही है। इस ऐतिहासिक सरजमी ने हर दौर में ऐसे ऐसे अनमोल हीरे पैदा किए जिन्होंने न सिर्फ. मुल्क बल्कि पूरी दुनिया में जौनपुर का नाम रोशन किया। यही शहर है जहाँ इंसानियत की खुशबू, मोहब्बत का पैगाम और कौमी यकजहती की रूहानी झलक हमेशा से मौजूद रही। इसी कड़ी में एक बेहद अजीम, मौतबर और मकबूल नाम है। डॉक्टर अब्दुल कादिर खान प्राचार्य मोहम्मद हसन डिग्री कॉलेज, जौनपुर। आप सिर्फ. एक आलिम-ए-दानिशवर या तालीमी शख्सियत नहीं, बल्कि इंसानियत के सच्चे पैरोकार और समाज की नफ़्सानी तकलीफों के मरहम हैं। तालीम के मैदान में आपकी खिदमात ने पूर्वांचल को नई बुलंदियों पर पहुँचा दिया।

बे-सहारा और गरीब तबके के लिए आपकी रहमत-ओ-शफकत, हर खुशी-गम में लोगों के साथ शरीक होना और उनके दुख-दर्द को अपना दर्द समझना, यह सब आपकी इंसानी अजमत की रोशन मिसाल है। सच तो यह है कि डॉक्टर कादिर साहब का नाम सिर्फ.जौनपुर ही नहीं, बल्कि पूरे पूर्वी उत्तर प्रदेश (पूर्वांचल) की तालीमी दुनिया में एक रौशन चराग की तरह है।

लेकिन अफसोस इस बात का है कि हमेशा माहौल खराब करने वाला विवादों में घिरा रहने वाला पर्दे के पीछे बैठा एक शख्स जलसा जुलूस और सीरत के असल पैगाम को बदनाम करने के लिए तमाम हथकंडे अपना रहा है।

यहां तक की अपने जाती मफाद और अना के नशे में आपस में इख्तेलाफ पैदा करने के लिए, लोगों के दरमियान नफरत की दीवार खड़ा करने के लिए, वो डॉक्टर साहब के पाक नाम का सहारा लेकर इलाके के लोगों में खलफ-ओ-शर फैलाने की नापाक साज़िश कर रहा है, और डॉक्टर कादिर साहब जैसी अजीम शख्सियत के नाम का गलत इस्तेमाल कर रहा है।

बढ़े सर्किल रेट और स्टाम्प शुल्क के विरोध में अधिवक्ताओं ने प्रदर्शन कर सौंपा ज्ञापन

संवाददाता, शाहगंज जौनपुर(उत्तरशक्ति)। अधिवक्ता समिति शाहगंज ने स्टांप शुल्क बढ़ोतरी एवं मूल्यांकन सूची की सर्किल रेट में वृद्धि के बाबत आपत्ति दर्ज कराया । ज्ञात हो कि वित्तीय वर्ष 2025- 26 में भूमि मूल्यांकन सूची की दर में वृद्धि होना था जिसके विरुद्ध अधिवक्ता समिति शाहगंज दो दिन पूर्व आपत्ति दर्ज कराई थी। आरोप है कि मनमानी तरीके से सर्किल रेट में वृद्धि कर दी गई। जिससे आम जनमानस के ऊपर काफी भार पड़ रहा है। अधिवक्ता संघ ने मांग किया है कि जल्द सर्किट रेट में की गई वृद्धि को वापस लेकर पूर्व की भांति इस सर्किल रेट बहाल किया जाय।

जिसको लेकर अधिवक्ता समिति शाहगंज ने अध्यक्ष भोलेन्द्र कुमार की अध्यक्षता में एक आपात बैठक किया। जिसमें स्टाम्प शुल्क बढोत्तरी एवं सर्किल रेट वृद्धि पर विरोध प्रकट किया।

न्यायिक कार्य से विरत रहने का निर्णय लिया। एवं संचालन डॉ .दुर्गा प्रसाद ने किया। सब रजिस्ट्रार कार्यालय गेट पर एकजुटता के साथ नारेबाजी करते हुए अधिवक्ताओं ने स्टाम्प शुल्क बढोत्तरी पर विरोध प्रदर्शन दर्ज कराते हुए जिलाधिकारी को प्रेषित ज्ञापन सब रजिस्ट्रार कार्यालय उपनिबंधक सुनील कुमार सिंह को सौंपा। चेतावनी दी कि यदि शुल्क बढ़ोतरी वापस नहीं लिया जाता है तो अधिवक्ता संघ और बड़ा आंदोलन करेगा। पुरा दिन रजिस्ट्री कार्यालय में कार्य बाधित रहा। उक्त विरोध प्रदर्शन में अधिवक्ता सुभाष यादव अधिवक्ता राजीव सिंह धन संग्रह के अध्यक्ष राम विश्वकर्मा छोटू यादव राम आशीष यादव अधिवक्ता संतोष तिवारी हरिश्चंद्र यादव अधिवक्ता अनवर सहित तमाम अधिवक्ता उपस्थित रहे।

वाराणसी में स्पा एंड सैलून की आड़ में फल-फूल रहा था देह व्यापार

चार युवतियों के साथ मकान मालिक और अन्य चार गिरफ्तार

वाराणसी(उत्तरशक्ति)। जनपद के रोहनिया थाना क्षेत्र के खुशीपुर में रविवार देर शाम पुलिस के द्वारा स्पा एंड सैलून की आड़ में देह व्यापार का राज खुला। स्पा सेंटर से संचालक, सहायक, मकान मालिक, दो ग्राहक और चार युवतियां गिरफ्तार हुईं। सेंटर से एसओजी-2 ने आपत्तिजनक सामग्री, क्यूआर कोड, आईफोन समेत नौ मोबाइल, रजिस्टर, चार हजार नकद समेत अन्य सामान बरामद किए। संचालक समेत ग्वालियर के मोरार निवासी रॉकी मौर्या, ग्राहक कछवा रोड के खोचवा निवासी विवेक गुप्ता, सुंदरपुर निवासी शशिकांत पाल और मकान मालिक खुशीपुर निवासी सुनील शर्मा को गिरफ्तार किया गया। चारों युवतियां शहर और पश्चिम बंगाल की रहने वाली हैं। पुलिस ने सीसी फुटेज, मोबाइल डेटा एनालिसिस और फॉरेंसिक साक्ष्य को जुटाया है। एसओजी-2 को भदवर के रहने वाले कुछ व्यक्तियों ने सूचना दी कि मकान में किराये पर खुले स्पा एंड सैलून में कुछ दिन से कुछ तो गलत काम हो रहा है। लड़के और लड़कियों का आना जाना लगा रहता है।

जुलूस-ए-अमारी में श्रद्धालुओं के लिए नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर

बड़ागांव में दर्जनों डॉक्टरों ने की हजारों मरीजों की जांच, मुफ्त दवाएं भी बांटी

शाहगंज,जौनपुर (उत्तरशक्ति)। शाहगंज क्षेत्र के बड़ागांव में मोहर्रम के अंतिम जुलूस-ए अमारी के दौरान अल मेहंदी मानव सेवा ट्रस्ट ने नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया। सोमवार सुबह 6 बजे से शुरू हुए इस शिविर में हजारों श्रद्धालुओं ने स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ लिया। डॉक्टर धर्मेंद्र यादव अपनी पूरी टीम के साथ शिविर में मौजूद रहे। डॉक्टर डीके रंजन ने शिविर की शुरूआत से ही मरीजों का परामर्श किया और उन्हें मुफ्त दवाएं दीं। शिविर में कई प्रमुख चिकित्सक शामिल हुए। इनमें डॉ.शफीक खान, डॉ.अनिल कुमार और बैंगलुरू से आए डॉ.हसीब अहमद खानशामिल थे। डॉक्टर गौरव भी मौजूद रहे। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र से डॉ आर बी यादव और डॉ हरिश्याम मौर्या ने भी शिविर में योगदान दिया। फार्मासिस्ट अरविंद कुमार, डॉ.नम्मो अहमद, डॉ.अब्दुल रहमान और डॉ ततहीर फातिमा ने भी अपनी सेवाएं दीं। अल मेहंदी मानव सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष इस्तखार हुसैन की अगुवाई में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान उपाध्यक्ष मेराज हाशमी, निजाम इदरीसी, शाहिद हुसैन इदरीसी, खुर्शीद हसन, मौलाना एजाज मोहसिन और अन्य पदाधिकारी

मानी डेन्टल हास्पिटल
मिलने का समय- सुबह 10 बजे से रात 9 बजे तक प्रत्येक दिन
सुविधायें-
- बिना दर्द के दाँत निकालना
- दाँत के रंग का मसाला भरना
- टेढ़े-मेढ़े दाँतों को सुन्दर बनाना
- जबड़े की हड्डी में नकली दाँत लगाना
- बत्तीसी लगाना (complete Denture)
- काउन (कंप) एवं ब्रिज लगवाने की सुविधा
- दाँतों का एक्स-रे (Digital X-Ray)
- बच्चों के मुख एवं दाँतों से सम्बन्धित समी
- रोगों का इलाज
- दाँतों की ब्लीचिंग
- दाँतों की सफाई व रख-रखाव
- पायरिया का इलाज
- आधुनिक मशीनों द्वारा बिना दर्द के दाँतों की नसों का इलाज (RCT)
- कीड़े लगे दाँतों में दाँत के रंग की लेजर फिलिंग
- गुटखे द्वारा बन्द मुँह का सफल एवं सम्पूर्ण इलाज
डा0 सुफियान अहमद
डेन्टल सर्जन बी. डी. एस., एम. आई. डी. ए.
9616356786
पता- नियाज़ शापिंग सेन्टर गुरैनी रोड, मानीकलाँ - जौनपुर

CMO Reg. RMEE. 2341801
SHIFA HOSPITAL
अहमदी मेमोरियल
शिफा मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल
डॉ0 अबू फैसल
MBBS, Ortho PGDS
हड्डी एवं जोड रोग विशेषज्ञ
समय 2 बजे से शाम 4 बजे तक
(वृहस्पतिवार)
डॉ0 मोहम्मद चाँद बागवान
MBBS, DNB, MD (Lucknow)
शूगर, चेस्ट एंव हृदय रोग विशेष
समय- सुबह 8 बजे 11 बजे तक
(मंगलवार)
डॉ0 यसीरा अली
MBBS, MS (obs & Gynae Surgeon)
स्त्री रोग एवं बांझपन विशेषज्ञ (Inferitility)
समय- सुबह 8 बजे से 11 बजे तक
(मंगलवार)
डा0 मोहम्मद अकमल
(फिजिशियन)
पता- मानीकलां, जौनपुर
डॉ0 सुनील कुमार दुबे
MBBS, MS
(Laproscopic Surgeon) on call)
डॉ0 एम के वर्मा
P.G D.C (Delhi)
(चर्म रोग विशेषज्ञ)
समय- 11 बजे 2 बजे तक (शनिवार)
डॉ0 मोहम्मद अब्दुल्लाह
(दाँत चिकित्सक)
समय - सुबह 9 से 11 बजे तक
(बुद्धवार, रविवार)
डॉ0 सना अब्दुल्लाह
(स्त्री रोग विशेषज्ञा)
समय - सुबह 9 बजे से 11 बजे तक
(बुद्धवार, रविवार)
डिजिटल एक्सरे, कम्प्यूटराइज़्ड पैथोलॉजी, E.C.G., हृदय रोग विशेषज्ञ, चेस्ट रोग विशेषज्ञ, हड्डी रोग विशेषज्ञ, स्त्री रोग विशेषज्ञ, दात चिकित्सक फिजियोथेरापी, डिलेवरी (नार्मल, सिजेरियन) दूरबीन विधि से पित्ताशय में पथरी, अपेंडिस्क, बच्चेदानी, हाइड्रोसील का ऑपरेशन भर्ती की सुविधा।
पता - मानीकलां, जौनपुर | 9451610571, 7380850571

पं चंद्रबदन मिश्रा के आवास प्रस्थापित गणपति विसर्जन संपन्न

मछली शहर, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। जनपद जौनपुर स्थित मछली शहर गणेश उत्सव के पावन पर्व पर आस्था के सागर में सर्वत्र भक्तों का समूह डुबकी लगाता नजर आ रहा है इसी क्रम में मछली शहर स्थित पंडित चंद्रबदन पुत्र परम पूज्य श्री गोरखनाथ मिश्र पावन महावीर धाम अजोसी धार्मिक पुस्तक भण्डार एवं पूजा सामग्री बाबा जी कुटिया मछली शहर में भी गणेश जी का आगमन हुआ जहाँ पर भारी संख्या में आम से खास हर व्यक्ति पहुँचकर दर्शन लाभ ले रहे थे। इस अवसर पर पंडित चंद्रबदन मिश्रा ने श्रद्धा पूर्वक गणेश जी का पूजा अर्चना कर रहे थे। पांचवे दिन गणेश जी की प्रतिमा को विसर्जित कर दिया गया। जिसमें बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए।

मुख्य चिकित्सा अधिकारी की उपस्थिति में स्वास्थ्य विभाग द्वारा स्वास्थ्य शिविर आयोजित

खेतासराय,जौनपुर (उत्तरशक्ति)। नगर पंचायत खेतासराय के वार्ड 2 मोहल्ला डोभी में कूड़ा कचरा, साफ सफाई, डेंगू , मलेरिया आदि संक्रामक रोगों के प्रसार के दृष्टिगत मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ0 लक्ष्मी सिंह की उपस्थिति एवं विशेष निर्देशन में जिला मलेरिया अधिकारी सुनील कुमार यादव एवं अधीक्षक सोंधी डॉ0 सूर्यप्रकाश यादव के नेतृत्व में स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा स्वास्थ्य शिविर आयोजित कर 36 से भी अधिक लोगों की मलेरिया डेंगू टेस्टिंग की गई जिसमें किसी भी व्यक्ति को मलेरिया डेंगू पॉजिटिव नहीं आया। फीवर लक्षण वाले एवं अन्य लोगों को आवश्यक दवाएं भी दी गई । पूरे मोहल्ले में कीटनाशी रसायन, एंटीलार्वा रसायन, ब्लीचिंग पावडर का छिड़काव कराया गया ।पूरे मोहल्ले में 195 जल पात्रों का सर्वे किया गया 23 जलपात्र जिसमें लार्वा मिले को निष्प्रयोज्य कराया गया। जनसमुदाय में मच्छरों, मच्छर जनित संक्रामक बीमारियों से बचाव के बारे में जागरूक किया गया एवं पोस्टर पैंफलेट लगाए गए। नगर पंचायत खेतासराय द्वारा शिकायत स्थल पर कूड़ा उठाने वाली गाड़ियों के माध्यम से कूड़ा कचरा हटवाया गया। सड़कों के किनारे जमा हुए पानी को निकलवाया गया साथ ही ब्लीचिंग पाउडर की डस्टिंग की गई। इस दौरान सहायक मलेरिया अधिकारी अशोक कुमार, डी सी पी एम खुबैब रजा, पर्यवेक्षक इंद्रजीत सिंह, शिवशंकर वर्मा,इम्यूनाइजेशन ऑफिसर राहुल यादव, लैब टेक्नीशियन सरिता विश्वकर्मा, क्षेत्रीय संगिनी, आशा एवं नगर पंचायत खेतासराय की टीम उपस्थित रहीं।

महेश पटेल बने वसई-विरार व्यापारी आघाड़ी अध्यक्ष

वसई-विरार। वसई विरार जिला भाजपा अध्यक्ष प्रज्ञा पाटिल ने महेश पटेल को उनकी जनता के बीच मजबूत पकड़, निष्ठावान कार्यशैली और जुझारू स्वभाव को देखते हुए व्यापारी आघाड़ी वसई-विरार का अध्यक्ष नियुक्त किया है। इस नियुक्ति के बाद कार्यकताओं और पदाधिकारियों में खुशी की लहर दौड़ गई। स्थानीय व्यापारियों ने भी इस फैसले का स्वागत करते हुए उम्मीद जताई कि महेश पटेल व्यापारी वर्ग की समस्याओं को प्राथमिकता से उठाकर उनके समाधान की दिशा में ठोस कदम उठाएँगे। भाजपा पदाधिकारियों का कहना है कि महेश पटेल की सक्रियता और जनता से जुड़ाव पार्टी और व्यापारी समाज दोनों के लिए लाभकारी साबित होगा। क्या आप चाहेंगे कि मैं इसमें महेश पटेल या भाजपा जिला अध्यक्ष प्रज्ञा पाटिल का बयान/कोटेशन भी जोड़ दूँ ताकि खबर और प्रभावशाली लगे?

अविका एडुवर्सिटी ने किया ऑनरेरी डॉक्टरेट कॉन्वोकेशन 2025 का आयोजन

पटना(उत्तरशक्ति)। अविका एडुवर्सिटी एवं भारत वर्चुअल यूनिवर्सिटी की ओर से पटना स्थित होटल क्लार्क इन में ऑनरेरी डॉक्टरेट कॉन्वोकेशन 2025 का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर शिक्षा, स्वास्थ्य, समाज सेवा, कला और उद्योग जगत के चुनिंदा 35 व्यक्तित्वों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए ऑनरेरी डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई। कार्यक्रम में बॉलीवुड अभिनेता बिंदु दारा सिंह बतौर चीफ गेस्ट शामिल हुए। इसके साथ ही मुख्य अतिथि के रूप में भारत वर्चुअल यूनिवर्सिटी के चेयरमैन डॉ. कुमार राजेश, गेस्ट ऑफ ओनर डॉ. संदीप बंसल, हरिमोहन कपूर एवं अविका एडुवेर्सिटी के निदेशक चंदन झा मौजूद रहे। इस मौके पर अभिनेता बिंदु दारा सिंह ने सम्मानित हस्तियों को बधाई देते हुए कहा, समाज के लिए निस्वार्थ भाव से कार्य करने वाले ही सच्चे नायक हैं। इस तरह के आयोजन युवाओं को प्रेरणा देते हैं और समाज को सकारात्मक दिशा प्रदान करते हैं। अविका एडुवर्सिटी के निदेशक चंदन झा ने कहा कि संस्था का उद्देश्य ऐसे लोगों को सम्मानित करना है जिन्होंने अपने कार्यों से समाज में नई राह दिखाई है। उन्होंने कहा, ऑनरेरी डॉक्टरेट की यह उपाधि केवल एक सम्मान नहीं, बल्कि समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाने का प्रतीक है। कार्यक्रम का समापन आभार ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें सभी सम्मानित हस्तियों ने अविका एडुवर्सिटी का धन्यवाद करते हुए समाज के लिए और अधिक कार्य करने का संकल्प लिया।

घाटकोपर वेस्ट के अमृतनगर स्थित सागर पार्क उत्सव मंडल द्वारा स्थापित श्री गणपति बप्पा के दरबार में घाटकोपर वेस्ट विधान सभा के विधायक राम कदम बप्पा का दर्शन आशीर्वाद लिए। और उपस्थित मंडल के सभी सेवाधारियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किए।

अय्यामे अजा के आखिरी जुलूस में उमड़े जायरीन

जौनपुर(उत्तरशक्ति)। अय्यामे अजा की आखिरी तारीख को शहर के दो मोहल्लों से जुलूस निकाला गया। अंजुमनों ने नौहाख्वानी और सीनाजनी कर इमाम हुसैन को याद किया। इससे पहले रविवार को रातभर लोगों ने अपने घरों में नौहामातम किया। कई इलाकों के इमाम चौक पर ताजिया भी रखा गया। हर घरों और इमामबाड़ों से यही सदा आ रहीं थी, अलविदा हुसैन मेरे अलविदा हुसैन, सालभर जो जिएगा वो फिर रोएगा। नौहाख्वानी के साथ लोगों ने अश्कों का नजराना पेश किया। सोमवार को शहर के ख्वाजा दोस्त स्थित सैयद गुलाम अब्बास के इमामबाड़े से अलम, तुर्बत और दुलदुल का जुलूस निकाला गया। जुलूस की मजलिस को आजमगढ़ के मौलाना सैयद मोहम्मद मेहंदी मेहंदवी ने खिताब किया। कहा कि इमाम हुसैन ने जुल्म के आगे झुके नहीं बल्कि उससे लड़कर अपनी शहादत पेश कर दी। इसके बाद 11वें इमाम की तुर्बत निकाली इसके साथ अलम और दुलदुल भी निकला। इस दौरान लोगों ने जियारत किया। जुलूस में तकरीर डा. कमर अब्बास ने भी खिताब किया।

जुलूस अपने कदीमी रास्तों से होता हुआ सिपाह में जाकर खत्म हुआ। रास्ते में एक तकरीर जनाब मोहम्मद हसन ने खिताब किया। जुलूस नबी साहब जाकर संपन्न हुआ। इसके बाद सिपाह मोहल्ला स्थित इमामबाड़े से जुलूस निकला। इसमें सोजख्वानी गौहर अली जैदी साहब उनके साथियों ने किया। मजलिस को खिताब करते हुए मौलाना मोहम्मद मेहंदी मेहदवी ने 11वें इमाम की शहादत का दिलसोज मंजर पेश किया।

जुलूस में शबीहे अलम, दुलदुल और अमारियां निकाली गई। इसी दौरान जर्रार हुसैन इममाबाड़े से भी जुलूस निकाला गया। जुलूस अपने कदीमी रास्तों से होता हुआ नबी साहब के इमाम बाड़े में पहुंचा। यहां पर तकरीर करते हुए डा. कमर अब्बास ने कहा कि अय्यामे अजा का आज आखिरी दिन है इमाम पर दिलभर के रो लीजिए।

महाराजगंज को जिला बनाने को लेकर योग गुरु ने निकाला दांडी मार्च

सिवान (उत्तरशक्ति)। बिहार के सिवान जिला अंतर्गत महाराजगंज, महाराजगंज को जिला बनाने और मौनिया बाबा मेला में प्रशासन द्वारा खराब व्यवस्था को लेकर योग प्रचारक अंगद जी महाराज के द्वारा दंडवत यात्रा निकाली गई। योग प्रचारक अंगद जी महाराज ने बताया महाराजगंज मौनिया बाबा स्थान से महेंद्रानाथ स्थान और फिर वहां से पटना तक का पैदल और दंडवत यात्रा चलेगा। पटना सीएम आवास मुख्यमंत्री को ज्ञापन योगी अंगद जी महाराज देंगे। अगर वहां पर महाराजगंज जिला घोषित करने का ज्ञापन दिया जाएगा, मांग नहीं माने जाने पर अनिश्चितकालीन अनशन आंदोलन होगा। मौके पर समाजसेवी जितेंद्र सिंह दूधी टोला जिला बनाओ संघर्ष समिति के सभी सदस्य अमित कुमार सिंह ,अजय सिंह अली इमाम साहब, आजाद कुमार सिंह, विनोद कुमार सिंह, बृजेश कुमार प्रसाद, पूनम देवी, मुन्ना प्रसाद ,गुड़िया देवी आदि लोग शामिल थे।

गणेश चतुर्थी पर जगह-जगह गणपति दर्शन का लाभ

मुंबई। गणेश चतुर्थी के पावन अवसर पर जगह-जगह गणपति बप्पा के दर्शन का लाभ भक्तों को मिला। हर घर, हर गली और हर नुक्कड़ पर गणपति बप्पा के जयकारों से माहौल भक्तिमय हो गया।

कलिना विधानसभा के जनसंपर्क कार्यालय, वाकोला, सांताक्रुज (पूर्व) मुंबई में भी गणपति बप्पा की स्थापना की गई, जहाँ संजय पोतनीस (आमदार), सुखबिंदर सिंह (लाला भाई), जय हिंद कुमार प्रजापति समेत अन्य गणमान्य लोगों ने बप्पा के दर्शन किए।

भक्तों को मोदक और सेव बुंदी का प्रसाद वितरित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित सभी लोगों ने एक-दूसरे को गणपति बप्पा मोरया, मंगल मूर्ति मोरया कहते हुए हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। क्या आप चाहेंगे कि मैं इसे और छोटा प्रेस रिलीज फॉर्मेट में बनाऊँ या थोड़ा विस्तृत न्यूज रिपोर्ट जैसा रखूँ?

8 सितम्बर से नही चलेंगे अनफिट स्कूली वाहन: जिलाधिकारी

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। जिलाधिकारी डॉ० दिनेश चंद्र की अध्यक्षता में जिला विद्यालय यान परिवहन सुरक्षा समिति की बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में संपन्न हुई। बैठक में स्कूली वाहनो के प्रपत्रों की अनिवार्यता, विद्यालय वाहनो की आयु सीमा शिक्षा संस्था बस/अनुबंधित बस विद्यालय वैन पंजीयन के दिनांक से 15 वर्ष, विद्यालय स्तर पर विद्यालय सुरक्षा समिति का गठन, विद्यालय परिवहन सुरक्षा समिति का कार्य, विद्यालय वाहनो की पार्किंग एवं उनका विराम स्थल, विद्यालय वाहनों के ड्राइवरो की पात्रता एवं कर्तव्य, विद्यालय वाहनो में सुरक्षा से सम्बन्धित मानक, जागरूकता कार्यक्रम के संबंध आदि के संबंध में विस्तार से चर्चा हुई। जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि सभी विद्यालयों में वाहनों का संचालन तभी किया जाए, जब वाहनों के प्रपत्र पूर्ण हो, यदि ऐसे वाहन जिनके प्रपत्र पूर्ण नहीं है उन वाहनों के विरुद्ध बंद/चालान की कार्रवाई की जाए। सभी विद्यालयों में विद्यालय सुरक्षा समिति का गठन किया जाए और उक्त समिति अपने-अपने विद्यालय में संचालित वाहनों का परीक्षण करके ही वाहनों का संचालित कराये। सभी विद्यालय अपने कैंपस के अंदर ही बच्चों को वाहन से उतारने एवं चढ़ाने का कार्य करें। सभी विद्यालय अपने यहाँ नोडल ट्रांसपोर्ट के रूप में किसी अध्यापक को नामित करें, जो बच्चों को यातायात के प्रति जागरूक का कार्य करें। जिलाधिकारी ने कहा कि 08 सितम्बर 2025 के बाद अनफिट स्कूली वाहन नही चलेगा। प्रत्येक विद्यालयी वाहनों के समस्त प्रपत्र फिटनेस, परमिट, बीमा, प्रदूषण, डी0एल0 पूर्ण कराकर ही वाहन का संचालन करें। बैठक में सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी ने अवगत कराया कि जनपद में अनफिट स्कूली वाहनों के विरुद्ध प्रवर्तन कार्यवाही करते हुए माह 01 जुलाई 2025 से 31 अगस्त 2025 तक कुल 90 वाहनों का चालान/बन्द की कार्यवाही की गयी है और अनफिट स्कूली वाहनों के प्रबन्धक/प्रधानाचार्य को नोटिस प्रेषित किया गया है कि अनफिट वाहनों के प्रपत्र पूर्ण कराने के उपरान्त ही वाहन का संचालन सुनिश्चित करें। इस अवसर पर अध्यक्ष नगर पालिका परिषद जौनपुर श्रीमती मनोरमा मौर्य, राज्यमंत्री खेल एवं युवा कल्याण विभाग प्रतिनिधि अजय सिंह, मुख्य राजस्व अधिकारी अजय अम्बष्ट, नगर मजिस्ट्रेट इन्द्र नन्दन सिंह, एआरटीओ एस.के. सिंह, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी डॉ0 गोरखनाथ पटेल, जिला सूचना अधिकारी मनोकामना राय, सीओ ट्रैफिक, आरआई अशोक यादव सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

जौनपुर में जीवन रक्षक तकनीक सी पी आर प्रशिक्षण कार्यशाला सम्पन्न

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। मानव सेवा को समर्पित मुरली फाउंडेशन जौनपुर द्वारा पुलिस लाइन परिसर में लगभग 700 की संख्या में मौजूद ट्रेनी रंगरूटों को सी पी आर व एक्सीडेंट ट्रामा हैंडलिंग का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम को कृष्णा हर्ट केयर व ट्रामा सेंटर जौनपुर के प्रख्यात अस्थि रोग विशेषज्ञ डॉक्टर रोबिन सिंह द्वारा प्रतिपादित किया गया। प्रशिक्षण के दौरान डॉक्टर रोबिन सिंह ने डमी के माध्यम से जीवन रक्षक तकनीक सी पी आर का सजीव प्रशिक्षण दिया व बताया कि यदि समय रहते सी पी आर मिल जाये तो 10 में से 7 व्यक्तियों की जान बचने की संभावना रहती है ।उन्होंने अध्यनरत पुलिस कर्मियों को डमी के माध्यम से सी पी आर तकनीक का अभ्यास करवाया व अन्य उपयोगी जानकारी दी, इसी के साथ दुर्घटना में घायल व्यक्ति की सही तरीके से मदद कैसे करे ताकि हमारे प्रयास सफल हो पर विस्तृत चर्चा की जैसे कि दुर्घटना ग्रस्त व्यक्ति से बह रहा खून कैसे रोके, कैसे उसके शरीर को सुरक्षित स्थान तक किन सावधानियों के साथ पहुँचाये। अत्यधिक रक्त स्राव को कैसे रोके इत्यादि पर विस्तृत जानकारी दी । कार्यक्रम निदेशक मनीष चंद्रा ने बताया कि विदेशों में सी पी आर तकनीक का प्रशिक्षण कालेज स्तर पर अनिवार्य है,इसकी सही जानकारी हमे मानव जीवन बचाने में मदद करती है।संस्था अध्यक्ष अमित कुमार पांडेय ने बताया कि संस्था का प्रयास है कि अधिक से अधिक संख्या में लोगो को सी पी आर प्रशिक्षण दे कर उन्हें जागरूक किया जा सके और मानव जीवन बचाया जा सके। इसी क्रम में अगली प्रशिक्षण कार्यशाला निषाद समाज के साथ लगाई जाएगी ताकि डूबते हुए व्यक्ति की सही तरीके से मदद कर उसकी जान बचाई जा सके। इस अवसर पर सदस्य के के मिश्रा ने मुरली परिवार द्वारा किये जा रहे समाज सेवा से जुड़े अन्य कार्यक्रमो की विस्तृत जानकारी प्रदत की । कार्यक्रम की अध्यक्षता एस पी नगर आयुष श्रीवास्तव द्वारा की गई व पुलिस लाइन्स के कर्मियों को इस कार्यशाला का पूर्ण लाभ लेने हेतु प्रेरित किया गया ।इस अवसर पर नाक कान गला रोग विशेषज्ञ डॉक्टर बृजेश कनौजिया , संजय जायसवाल, संरक्षक रविकांत जायसवाल, संस्थापक सदस्य पंकज सिंह , अतुल जायसवाल,नवीन कुमार मिश्रा, अनिल मौर्य , राजेश किशोर ,पी आर हेड योगेश साहू ,नित्यानंद पांडेय उपस्थित रहे व अंत मे धन्यवाद ज्ञापित सचिव अजय सिंह द्वारा समस्त आगंतुक का किया गया।

एड. साधना धुरी का जन्मदिन मनाया गया

वसई। वसई विधानसभा चुनाव प्रमुख एवं एडवोकेट साधना धुरी का जन्मदिन वसई रोड पश्चिम स्थित मनश्री हॉल में बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर वसई विधायक स्नेहा दुबे पंडित मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। कार्यक्रम में साधना धुरी मैडम के प्रिय मित्र छोटू आनंद, मिलन चौहान, प्रिय पुत्री राधिका धुरी तथा विशेष अतिथि संजय धुरी, मनीष धुरी, करिश्मा धुरी, रुचिका धुरी, सीमा धुरी, अशोक रानखंभ, आर्यन रानखंभ, चंद्रशेखर धुरी दादा, कुमार धुरी, सुनील धुरी, विवेक धुरी और आशीष धुरी सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। वहीं वसई साईं नगर 97 वॉर्ड से मनोज शर्मा, कल्पेश चौहान, बबीता शर्मा, कंचन सोनी, लालजी कनोजिया, विजय राज गोर, नरहर जाधव, प्रिया प्रेमलवर, हर्षित शाह, दुर्लभ पढ़ीयार, मनीष राठौड़, कल्पेश मोरिया और रणजीत सोनी ने भी अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। सभी मेहमानों के साथ मिलकर केक काटकर जन्मदिन मनाया गया और एड. साधना धुरी को लंबी एवं स्वस्थ आयु की शुभकामनाएँ दी गईं। कार्यक्रम का संचालन साधना धुरी के मित्र नयन जैन और बकुलभाई मेहता ने किया और अपनी शानदार प्रस्तुति से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

श्री लक्ष्मी पूजा महासमिति की चुनावी बैठक सम्पन्न, कृष्ण कुमार जायसवाल अध्यक्ष एवं संतोष यादव महासचिव चुने गये

जौनपुर(उत्तरशक्ति)। जनपद की समस्त लक्ष्मी पूजन समितियों की महासंस्था श्री लक्ष्मी पूजा महासमिति की बैठक नगर के अचला देवी घाट पर स्थित माता रानी के दरबार में सम्पन्न हुई जहां आगामी मां लक्ष्मी पूजनोत्सव को लेकर नवीन कार्यकारिणी की चयन प्रक्रिया हुई। संरक्षक डा. राम नारायण सिंह एवं रामजी जायसवाल की देख रेख में हुई बैठक की अध्यक्षता अध्यक्ष लाल बहादुर यादव नैपाली एवं संचालन महासचिव कृष्ण कुमार जायसवाल ने किया। इस मौके पर महासचिव रहे कृष्ण कुमार जायसवाल को सर्वसम्मत से अगली कार्यकारिणी के लिये अध्यक्ष चुना गया जिस पर उपस्थित लोगों ने करतल ध्वनि से अपना समर्थन दे दिया। साथ ही कोषाध्यक्ष की भूमिका निभाने वाले संतोष यादव को महासचिव चुना गया जिस पर सभी लोगों ने माल्यार्पण करके दोनों पदाधिकारियों का स्वागत किया। महासमिति के संस्थापक स्व. सुशील वर्मा एडवोकेट को नमन करते हुये संरक्षक डा. राम नारायण सिंह, रामजी जायसवाल, दीपक चिटकारिया, अजय पाण्डेय, जगदीश प्रसाद मौर्य गप्पू, पूर्व अध्यक्ष चन्द्रशेखर निषाद बबलू, निवर्तमान अध्यक्ष लाल बहादुर यादव नैपाली सहित अन्य वक्ताओं ने अपना विचार व्यक्त करते हुये आगामी पुरस्कार वितरण समारोह एवं लक्ष्मी पूजनोत्सव को भव्य तरीके से किये जाने पर जोर दिया। इस मौके पर आये लोगों का स्वागत वैभव वर्मा पुत्र स्व. सुशील वर्मा एडवोकेट ने किया। वहीं महासमिति से जुड़े नये सदस्य आदर्श श्रीवास्तव, राजा अग्रहरि, सत्यम प्रजापति, अश्वनी कुमार सहित अन्य लोगों का स्वागत किया गया। वहीं नीरज श्रीवास्तव, अतुल जायसवाल, शिवा वर्मा, जयकिशन साहू, शुभांशू जायसवाल, डा. आशुतोष सिंह, राहुल सिंह सहित अन्य वक्ताओं ने नवचयनित अध्यक्ष एवं महासचिव से कहा कि आप दोनों के नेतृत्व में महासमिति के सभी कार्यक्रम जौनपुर में एक लकीर खीचेंगे। इस अवसर पर कृष्णकान्त विश्वकर्मा, दीपक अग्रहरि, श्रेयश जायसवाल, डा. हर्षित गुप्ता, अभिषेक अग्रहरि, सूर्य प्रकाश विश्वकर्मा, संकल्प गुप्ता, दिलीप जायसवाल, कृष्ण कुमार यादव, गौरव सेठ, नीरज शाह, केतन गुप्ता, संजय शुक्ला, अंकुर मिश्रा, विक्की साहू, मुकेश यादव, दिलीप प्रजापति, अतुल मिश्रा सहित तमाम पदाधिकारी, सदस्य आदि उपस्थित रहे। अन्त में डा. आशुतोष सिंह एवं राहुल सिंह ने समस्त आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

घाटकोपर वेस्ट में सी.ए नेहा भानुशाली और हेमा रामबिलास पाठक के नए ऑफिस के उद्घाटन में अतिथि के तौर पर उपस्थित भाजपा नेता रामबिलास पाठक, जेएमडी ग्रुप के चेयरमैन हरीश पांडेय, समाजसेवक संतोष दुबे सहित अन्य गणमान्य लोग शामिल होकर अपनी शुभमनाएं दी।

विरार पश्चिम में 6वां रक्तदान एवं स्वास्थ्य शिविर सफलतापूर्वक संपन्न

-मोहीत दुबे

विरार (उत्तरशक्ति)। गणेशोत्सव के पावन अवसर पर माँ सुशीला सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा 6वां रक्तदान शिविर, निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर एवं निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन उत्सव मित्र मंडल, एवेन्यू छ, रुस्तमजी, विरार पश्चिम में किया गया। शिविर में लोगों का उत्साह देखने लायक था। 200 से अधिक लोगों ने निःशुल्क स्वास्थ्य एवं नेत्र जांच का लाभ लिया जबकि बड़ी संख्या में नागरिकों ने रक्तदान कर सामाजिक उत्तरदायित्व निभाया। इस कार्यक्रम का आयोजन ट्रस्ट के चेयरमैन श्री सत्य त्रिपाठी जी के मार्गदर्शन तथा श्री मोहित दुबे के सहयोग से किया गया। शिविर को सफल बनाने में उत्सव मित्र मंडल, सरला ब्लड बैंक तथा वॉकहार्ट अस्पताल, मीरा रोड का विशेष योगदान रहा। ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने बताया कि उनका उद्देश्य समाज में स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाना तथा सेवा के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचना है। उनका यह प्रयास आगे भी सेवा, समर्पण और संकल्प की भावना के साथ जारी रहेगा।

चीन-रूस के खुले द्वार, कारपेट इंडस्ट्री को नई ऊंचाई

-सुरेश गांधी

वाराणसी। भारत का कालीन उद्योग, जो कभी देश की पहचान और निर्यात का अहम जरिया था, आज अमेरिकी टैरिफ और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा की वजह से संकट से गुजर रहा है। भदोही और वाराणसी जैसे कालीन हब में लाखों बुनकर और कारीगर अब चीन और रूस से बेहतर होते रिश्तों को नई उम्मीद के तौर पर देख रहे हैं। खास यह है कि टीवी में पीएम मोदी, शी जिनपिंग व पुतीन के मुस्कान के बीच मिलते गले को देखकर भदोही और वाराणसी जैसे कालीन उद्योग के केंद्रों में लाखों बुनकर व कारीगर सरकार की नीतिगत पहल की प्रतीक्षा कर रहे हैं। कालीन निर्यात संवर्धन परिषद के चेयरमैन कुलदीप राज वट्टल का कहना है कि अगर सरकार कस्टम ड्यूटी में राहत दिलाने की पहल करे तो यह उद्योग दोबारा चमक सकता है।

चूंकि रूस ठंडा देश है और वहां हर घर, होटल और दफ्तर में कालीन का इस्तेमाल आम है। भारतीय हैंडमेड कारपेट अपनी खूबसूरती और गर्माहट के लिए वहां बेहद

लोकप्रिय हैं। लेकिन मौजूदा समय में वहां भारतीय कालीनों पर 45 से 50 प्रतिशत तक कस्टम ड्यूटी लगती है, जिसकी वजह से कीमतें बढ़ जाती हैं। चेयरमैन का कहना है कि रूस से आए खरीदार हमारे बनाए कालीन देखकर खुश हो जाते हैं, लेकिन टैक्स इतना ज्यादा है कि सौदा कम हो जाता है। अगर सरकार राहत दिला दे तो वहां का बाजार हमारे लिए न सिर्फ वरदान साबित होगा, बल्कि सबसे बड़ा बाजार बन सकता है। बता दें, भारतीय कालीन केवल सजावटी वस्तुएं नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति और शिल्पकला का जीवंत उदाहरण हैं। अगर सरकार चीन और रूस से व्यापार समझौते कर कस्टम ड्यूटी घटाने में सफल होती है, तो यह उद्योग न केवल अरबों डॉलर का निर्यात कर पाएगा बल्कि पूर्वांचल के लाखों बुनकर परिवारों की जिंदगी में खुशहाली का सेतु भी बनेगा।

चीन में हैंडमेड कालीनों की खास जगह

चीन कभी हैंडमेड कालीन निर्माण में अग्रणी था, मगर अब वहां सिर्फ मशीन मेड कालीन बनते हैं। इसके बावजूद वहां के लोग आज भी हस्तनिर्मित कालीनों को कला और परंपरा का प्रतीक मानते हैं। फिलहाल चीन भारतीय कालीनों पर 33 से 35 फीसदी कस्टम ड्यूटी वसूलता है। सीईपीसी के पूर्व प्रशासनिक सदस्य उमेश गुप्ता का कहना है, चीन के खरीदार हमसे बार-बार हैंडमेड कालीन मंगाने की बात करते हैं, लेकिन टैक्स के कारण कीमतें बढ़ जाती हैं। अगर यह कम हुआ तो न सिर्फ हमारी रोजी-रोटी और मजबूत होगी, बल्कि विदेशी मुद्रा अर्जित होने के साथ ही लाखों बुनकर परिवारों को स्थायी रोजगार और आर्थिक मजबूती भी मिलेगी। साथ ही भारत की हस्तशिल्प परंपरा को विश्व पटल पर नई मजबूती मिलेगी.

भारत हर साल करीब 16,000 करोड़ रुपये मूल्य के कालीन निर्यात करता है। जिसमें अमेरिका अकेले इसका 60 फीसदी बाजार है। जबकि यूरोप करीब 30 फीसदी हिस्सा लेता है। रूस का कालीन बाजार सालाना लगभग 2,000 करोड़ रुपये का है, पर भारत की हिस्सेदारी अभी सिर्फ 10 फीसदी से कम है। चीन का हैंडमेड कालीन बाजार करीब 2,500 करोड़ रुपये सालाना है, लेकिन भारत का हिस्सा 8-10 फीसदी ही है। उद्यमियों को अनुमान है कि कस्टम ड्यूटी घटने पर भारत अगले पांच साल में रूस-चीन में दोगुना निर्यात कर सकता है।

अमेरिकी टैरिफ से मिली चोट, अब नई उम्मीद

अमेरिका भारतीय कालीनों का सबसे बड़ा खरीदार रहा है। लेकिन ट्रंप प्रशासन के टैरिफ ने उद्योग की कमर तोड़ दी। इस टैरिफ से उद्योग को गहरी चोट पहुंची। हालात यह है कि अमेरिकी बाजार में प्रतिस्पर्धा अब कठिन है। भदोही के उद्योगपति एवं सीईपीसी के सीनियर प्रशासनिक सदस्य वासिफ अंसारी कहते हैं, अमेरिकी टैरिफ के बाद हमारे लिए वहां का बाजार संभालना मुश्किल हो गया है। उनका कहना है कि चीन और रूस जैसे बड़े बाजार खुलने से भारत अमेरिका पर निर्भरता न सिर्फ घटा सकता है, बल्कि हमारी सांसें फिर से चलने लगेंगी। अब उम्मीद है कि चीन और रूस में रास्ते खुलें तो हम फिर से दुनिया में अपनी पहचान मजबूत कर पाएंगे।

क्या है वाणिज्य मंत्रालय

वाणिज्य मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी का कहना है, भारत और रूस के बीच व्यापार समझौते पर बातचीत जारी है। कालीन उद्योग को इसमें विशेष प्राथमिकता दी जा रही है। वहीं, वस्त्र मंत्रालय के सूत्र बताते हैं, बुनकरों और निर्यातकों की समस्याओं को देखते हुए सरकार कस्टम ड्यूटी कम कराने की दिशा में कूटनीतिक स्तर पर पहल कर रही है।

I बाजार में बुनकर रोजमर्रा की चुनौतियों से भी जूझ रहे हैं। मजदूरी बढ़ी नहीं, जबकि ऊन और धागे जैसी कच्चे माल की कीमतें लगातार ऊपर जा रही हैं। इसके अलावा बिचौलियों की लंबी श्रृंखला के कारण असली मुनाफा बुनकरों तक नहीं पहुंच पाता। वाराणसी के बुनकर झुन्ना लाल कहते हैं, हम हफ्तों मेहनत करके कालीन बुनते हैं, लेकिन हमें बिचौलियों के कारण सही दाम नहीं मिलता। अगर निर्यात का सीधा रास्ता खुले तो हम भी अपने बच्चों को अच्छे स्कूलों में पढ़ा पाएंगे।

क्यों अहम है यह मौका?

रूस में कालीनों की भारी डिमांड, पर 50 फीसदी तक कस्टम ड्यूटी रोड़ा।

पटना में डीलरो पर लाठी चार्ज गिरफ्तारी के खिलाफ डीलरो की बैठक

सिवान (उत्तरशक्ति)। बिहार के सिवान जिला अंतर्गत महाराजगंज में बिहार प्रदेश फेयर प्राइस डीलर्स एसोसिएशन के आह्वान पर प्रखंड क्षेत्र के जन विक्रेताओं ने सोमवार को प्रखंड मुख्यालय शहर के मौनिया बाबा स्थित धर्मशाला में बैठक की। बैठक में डीलरों ने पटना के डाक बंगला चौराहा पर 22 अगस्त को प्रदर्शन कर रहे जनविक्रेताओं पर पुलिस द्वारा किए गए लाठीचार्ज और गिरफ्तारी की कड़ी निंदा की। इसी के विरोध में डीलरों ने बैठक में सरकार की दमनकारी नीतियों पर चर्चा की।

डीलरों ने बैठक में कहा कि डीलर अपने हक की लड़ाई लड़ रहे हैं। पुलिस ने बर्बरता दिखाई है। लाठीचार्ज के साथ पानी की बौछारें की गईं और कई विक्रेताओं को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है। उन्होंने चेतावनी दी कि सरकार जब तक गिरफ्तार डीलरों को बिना शर्त रिहा नहीं करती तब तक आंदोलन और तेज किया जाएगा। बैठक में डीलरों ने सरकार से अपनी आठ सूत्री मांगें पूरी करने की मांग भी की। इसमें प्रमुख रूप से जनविक्रेताओं को प्रति माह 30 हजार रुपये मानदेय देने, अनुकंपा की आयु सीमा पूर्व की तरह बहाल करने सहित कई अन्य मांगें शामिल हैं। वक्ताओं ने कहा कि सरकार यदि जल्द इन मांगों पर पहल नहीं करती तो आंदोलन प्रदेशव्यापी रूप लेगा। इस दौरान उपस्थित डीलरों ने सरकार विरोधी नारे लगाए और एकजुट होकर संघर्ष जारी रखने का संकल्प लिया। बैठक में प्रखंड के सभी डीलर शामिल थे।

आज शाम कार्यक्रम प्रस्तुत करेगा कला संस्कृति एवं युवा विभाग

सिवान (उत्तरशक्ति)। बिहार के सिवान जिला अंतर्गत महाराजगंज बिहार सरकार द्वारा मौनिया बाबा मेला राजकीय होने पर आज शहर के उमाशंकर चंपा देवी डीएवी स्कूल के प्रांगण में 5 बजे से जिला प्रशासन के द्वारा कला संस्कृति व युवा विभाग द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन होगा। सांस्कृतिक कार्यक्रम शहरवासियों का ध्यान आकर्षित करेगा। कार्यक्रम का उद्घाटन महाराजगंज के सांसद जनार्दन सिंह सीग्रीवाल व जिला प्रशासन व कला संस्कृति विभाग के अधिकारी दीप प्रज्वलित कर करेंगे। कार्यक्रम में लोकल कलाकार भी आपने कलाकारी को भोकल करेंगे। वहीं, शहर के विभिन्न संगीत संस्थानों के बच्चों भी अपने नृत्य और संगीत प्रदर्शन से दर्शकों को मंत्रमुग्ध करेंगे। यह आयोजन महाराजगंज में सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने और स्थानीय प्रतिभाओं को मंच प्रदान करने का एक सराहनीय प्रयास होगा।

पहेतिया पुल के पास बंदरों के हमले से बाइक सवार महिला की मौत

जौनपुर(उत्तरशक्ति)। बदलापुर थाना क्षेत्र में नेशनल हाईवे-56 पर एक दुखद घटना सामने आई। पहेतिया पुल के पास बंदरों के हमले से बाइक सवार महिला की मौत हो गई। मृतका की पहचान आहोपुर थाना सिंगरामऊ निवासी 55 वर्षीया कुमारी देवी के रूप में हुई। बतातें है कि सोमवार सुबह कुमारी देवी अपने परिजन के साथ बाइक से दवा लेने बदलापुर जा रही थीं। पहेतिया पुल के पास झुंड में मौजूद बंदरों ने अचानक हमला कर दिया। इस हमले से बाइक असंतुलित हो गई और कुमारी देवी सड़क पर गिर पड़ीं। स्थानीय लोगों ने तुरंत उन्हें बदलापुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। वहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। ग्रामीणों का कहना है कि इस क्षेत्र में बंदरों का आतंक लंबे समय से है। प्रशासन ने अब तक कोई कार्रवाई नहीं की है। स्थानीय लोगों ने प्रशासन से बंदरों के आतंक पर नियंत्रण की मांग की है। उनका कहना है कि इस पर तुरंत कार्रवाई की जाए ताकि भविष्य में ऐसी घटनाएं न हों।

पुलिस भर्ती के नाम कर जौनपुर निवासी दो शातिरों ने की लाखों की धोखाधड़ी

पैलानी बांदा, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। पुलिस भर्ती परीक्षा में पास कराने के नाम पर शातिरों ने दो सगे भाइयों से 35 लाख रुपये की ठगी कर ली है । भर्ती परीक्षा का रिजल्ट आने पर चयन नहीं हुआ तो दोनों भाइयों को ठगी का अहसास हुआ। आरोप है कि रुपये वापस मांगे तो जान से मारने की धमकी दी गई। पीड़ित की तहरीर पर तीन नामजद आरोपितों के खिलाफ धोखाधड़ी सहित अन्य धाराओं में मामला दर्ज किया गया है। पैलानी थानाक्षेत्र के ग्राम निवासी दिलीप द्विवेदी के मुताबिक, जनपद जौनपुर के नहोरा स्थित केरांव गांव निवासी कोमल कुमार तिवारी पुत्र कमलेश तिवारी ने उसे और उसके छोटे भाई को पुलिस भर्ती परीक्षा पास कराने का झांसा दिया था। कोमल कुमार तिवारी ने अपने साथियों प्रवीण रंजन और राजवेन्द्र प्रसाद तिवारी से मिलाया। तीनों ने दोनों भाइयों से पुलिस परीक्षा पास कराने के नाम पर 35 लाख रुपये नकद, ब्लैंक चेक, डाक्यूमेन्ट और स्टाम्प साइन कराके जमा करा लिए। पुलिस परीक्षा का रिजल्ट आया तो दोनों भाइयों का चयन नहीं हुआ। इस पर पीड़ितों ने पैसा और डाक्यूमेन्ट वापस मांगा। आरोपितों ने चेक बाउन्स कराने की धमकी देते हुए फोन पर गाली गलौज और परिवार को जान से मारने की धमकी दी है।पुलिस तहरीर के आधार ओर दोनों जौनपुर निवासी शातिरों की तलाश में है।

सुंदरकांड पाठ व श्री सत्यनारायण भगवान की पूजा संपन्न

मुंबई। पवई हीरानंदानी स्थित चित्रसेन रामबिलास पाठक के निवास पर गणपति बप्पा के आगमन के उपलक्ष्य में सोमवार को श्री सत्यनारायण भगवान की पूजा एवं सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया गया। पूजा-अर्चना और पाठ का समापन धार्मिक उत्साह एवं भक्ति भाव के साथ हुआ। इस अवसर पर श्री रामलीला उत्सव समिति के अध्यक्ष प्रभाकर चंद्रशेखर शुक्ल रिंकू, भाजपा नेता रामबिलास पाठक, समाजसेवी देवेंद्र प्रताप सिंह, शिवसेना नेता राजेश सिंह, पत्रकार पवन पाठक तथा महाराष्ट्र शासन के विशेष कार्यकारी अधिकारी महाराष्ट्र शासन आदेश मिश्र विशेष रूप से उपस्थित रहे। आयोजन स्थल पर धार्मिक वातावरण एवं भक्ति भाव से ओत-प्रोत दृश्य देखने को मिला।

सुकन्या समृद्धि योजना में बनारस के डाक कर्मियों ने जीते पुरस्कार : कर्नल विनोद

वाराणसी (उत्तरशक्ति)। वाराणसी परिक्षेत्र के डाक कर्मियों ने उत्तर प्रदेश में चलाए गए विशेष अभियान में पुरस्कार प्राप्त किये। कर्नल विनोद पीएमजी वाराणसी ने बताया कि बनारस के कुल चार डाक कर्मियों को लखनऊ में मुख्य डाक महाध्यक्ष उत्तर प्रदेश प्रणव कुमार ने पुरस्कृत किया है। उन्होंने बताया कि सम्मानित डाक कर्मियों में रविन्द्र कुमार साह सहायक अधीक्षक पश्चिम उपमंडल वाराणसी, अरुण प्रकाश पांडेय बीपीएम धौरहरा चौबेपुर वाराणसी तथा अमित भारती बीपीएम करधना मिजार्मुराद वाराणसी शामिल हैं।

कर्नल विनोद ने बताया कि वाराणसी परिक्षेत्र में आयोजित विशेष अभियान में सभी अधीक्षकों को घर घर जाकर जागरूकता अभियान चलाने के निर्देश जारी किए गए थे और साथ ही आशा कार्यकताओं और नर्सिंग होमों में जा कर बच्चों के बारे में सूचना एकत्र करने की ज़िम्मेदारी दी गई थी। इस अभियान के अंतर्गत बनारस के सभी स्कूलों को भी जोड़ा जाना था ताकि सभी दस साल तक की बच्चियों को सुरक्षित भविष्य के लिए सुकन्या समृद्धि योजना के तहत खाता खुलवाया जाए। कर्नल विनोद ने वाराणसी परिक्षेत्र के बचत खाता शाखा के अधिकारियों एवं कर्मचारियों विशेष रूप से परमानंद सहायक निदेशक और प्रकाश सहायक को बधाई देते हुए कहा कि यह पुरस्कार मिलना सारे वाराणसी परिक्षेत्र के लिए खुशी और गर्व की अनुभूति की बात है और साथ ही भविष्य में और बेहतर परिणाम प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। साथ ही उन्होंने कहा कि सुकन्या समृद्धि योजना के माध्यम से बच्चियों के उज्जवल भविष्य की नींव मजबूत करने की आवश्यकता है ताकि जब बच्ची की जरूरत उच्च शिक्षा जैसे मेडिकल कॉलेज में पढ़ाई और प्रोफेशनल कोर्स जैसे एमबीए या फिर पत्रकारिता आदि में दाखिला लेने की हो तो उसके लिए एक अच्छी राशि का सृजन किया जाए और वह अपनी पढ़ाई को बेहतर ढंग से संपन्न कर सके। कर्नल विनोद कुमार ने सुकन्या समृद्धि स्कीम के बारे में कहा कि डाक विभाग इस योजना के तहत समाज के बेहतर आर्थिक और सामाजिक जीवन के विकास में योगदान दे रहा है और भारत को एक सशक्त राष्ट्र बनाने की दिशा में आगे बढ़ा रहा है। उन्होंने दस साल से कम उम्र की लड़कियों के अभिभावकों से आग्रह किया कि वे अपनी बेटियों के प्रति सम्मान दिखाएं और निकट के डाक घर में जाकर उनके खाते खुलवायें। कर्नल साहब ने सभी बिजनेस घरानों, आर्मी यूनिट्स के अधिकारियों और जनता से अपील की है कि वह एक दूसरे को उनकी बच्चियों के लिए सुकन्या खाते भेंट करें ताकि भारत सही अर्थों में नारी सशक्तिकरण का उदाहरण प्रस्तुत कर सके।

वडाला पूर्व संगम नगर निवासी भाजपा नेता सुनील राय नहीं रहे

मुंबई (उत्तर शक्ति)। वडाला पूर्व संगम नगर निवासी भाजपा के तेजतर्रार युवा नेता सुनील राय का निधन दिनांक 31 अगस्त 2025 दिन रविवार को लोकमान्य तिलक सायन अस्पताल अस्पताल में मध्य रात्रि को अंतिम सांस ली । वे मूलतः उत्तर प्रदेश जनपद आजमगढ़ मऊ के मूल निवासी थे । वे लगभग 54 वर्ष के अल्प आयु में हम सबको छोड़कर चले गए उनका जाना समाज के लिए एक बड़ा छति है। सुनील राय एक सरल विचार , मिलनसार समाज में वर्चस्व रखने वाले समाजिक व्यक्ति थे , वे 15 वर्ष के आयु से ही भाजपा के सक्रिय कार्यकर्ता रहे । उनका पुत्र सुमांत राय ने वडाला श्मशान भूमि पर मुखाग्नि देकर अंतिम संस्कार किया। उस समय भाजपा के हजारों कार्यकर्ता तथा स्थानीय लोग उपस्थित थे। मुंबई से दैनिक उत्तर शक्ति समाचार पत्र के संपादक ओमप्रकाश प्रजापति, उपसंपादक प्रेम चंद मिश्रा, मां विंध्यवासिनी मंदिर के ट्रस्टी भरत भाई शुक्ला, भाजपा नेता रत्नेश अग्रवाल, मोहन प्रजापति, अशोक पांडेय, डॉ हरिनारायण पाण्डेय, अधिवक्ता भाजपा नेता ओमप्रकाश पांडेय, वडाला पश्चिम समाज सेवी के के मिश्रा बच्चन, ने भी भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की है ।और कहा कि ईश्वर परिवार वालों को दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

1500 वां जश्न-ए-ईद मिलाद-उन-नबी मोहम्मद साहब की विलादत के मौके पर फल का वितरण

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। हजरत मोहम्मद साहब की 1500वीं जश्न-ए-विलादत के अवसर पर सदर हॉस्पिटल (जौनपुर) में फल वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम दावत-ए-इस्लामी हिन्द की टीम इंचार्ज गरीब नवाज रिलीफ फाउंडेशन द्वारा आयोजित किया गया। इस दौरान अस्पताल में भर्ती मरीजों और डॉक्टरों को फल वितरित किए गए। साथ ही मोहम्मद साहब के बताए पैगाम इंसानियत, मोहब्बत और रहमत को आम लोगों तक पहुँचाया गया। कार्यक्रम की विशेषता इस आयोजन में हिन्दू-मुस्लिम एकता और गंगा-जमुनी तहजीब की झलक देखने को मिली। इसे आपसी भाईचारे, अमन-शांति और इंसानियत की सच्ची खिदमत बताया गया।वही इस मौके कर ,डॉ. जावेद ने कहा कि पैगम्बर-ए-इस्लाम मोहम्मद साहब ने हमेशा इंसानियत, मोहब्बत और रहमत का पैगाम दिया है। हमें भी समाज में आपसी मोहब्बत और भाईचारे को मजबूत करना चाहिए। अकिब अत्तारी बोले ऐसे कार्यक्रम न केवल मरीजों को हिम्मत देते हैं बल्कि उनके मनोबल को भी बढ़ाते हैं। मोहसिन अत्तारी ने कहा भारत की असली ताकत इसकी गंगा-जमुनी तहजीब है। हिन्दू-मुस्लिम एकता देश की ताजगी और भाईचारे का प्रतीक है। कार्यक्रम में नगर के कई गणमान्य लोग शामिल हुए। जिनमें मोहसिन आत्तारी, अकिब आत्तारी, गुफरान आत्तारी, इश्तियाक शेख, कलीम आत्तारी, आदि मौजूद रहे।

वाराणसी के IPS सरवणन टी को मिला शौर्य सम्मान, डीजीपी राजीव कृष्णा ने किया सम्मानित

वाराणसी(उत्तरशक्ति)। जनपद के डीसीपी क्राइम/एडीसीपी काशी के पद पर तैनात आईपीएस अधिकारी सरवणन टी को उनकी उत्कृष्ट पुलिसिंग और कार्यप्रणाली के लिए शौर्य सम्मान से सम्मानित किया गया। यह सम्मान समारोह लखनऊ में आयोजित किया गया, जहां डीजीपी राजीव कृष्णा ने उन्हें यह प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किया। आईपीएस सरवणन टी ने वाराणसी कमिश्नरेट में अपनी सेवा अवधि के दौरान साहस, विवेचना-कौशल और उत्कृष्ट नेतृत्व का परिचय दिया। उनके मार्गदर्शन में 26 पुलिस मुठभेड़ों के दौरान संपत्ति अपराध, गौकशी और हत्या जैसे जघन्य अपराधों में संलिप्त 43 अपराधियों को गिरफ्तार किया गया। एक नहीं अनेकों हैं उपलब्धियां, भेलूपुर थाना क्षेत्र में एक ही परिवार के पाँच सदस्यों की हत्या के मामले का सफल अनावरण। संकट मोचन महंत के आवास पर चोरी का मामला मात्र 24 घंटे में पूर्ण अनावरण किया गया । जिसमें 6 अपराधियों को गिरफ्तार कर 100% बरामदगी सुनिश्चित की, तेलुगू विभागाध्यक्ष पर हमला मामले में 3 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया और मास्टरमाइंड (पूर्व विभागाध्यक्ष) व उसके आंध्र प्रदेश निवासी छात्र की संलिप्तता का पदार्फाश किया। फर्जी कॉल सेंटर्स का किया भंडाफोड़ 29 लोगों को किया गिरफ्तार। सरवणन टी के नेतृत्व में कई सनसनीखेज और महत्वपूर्ण मामलों का सफलतापूर्वक अनावरण किया गया। वाराणसी में अपराध नियंत्रण में इन्होने महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनके इस योगदान की सराहना करते हुए डीजीपी ने उन्हें शौर्य सम्मान से सम्मानित किया जिसके वो हकदार थे।

कार की टक्कर से ऑटो सवार दो घायल, कार चालक फरार

खेतासराय,जौनपुर(उत्तरशक्ति। क्षेत्र के मनेछा स्थित बादशाही पेट्रोल पंप के पास सोमवार को एक सड़क हादसे ने लोगों को हिला कर रख दिया। तेज रफ्तार कार ने खड़ी ऑटो को टक्कर मार दी, जिससे दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय लोगों ने घायलों को तत्काल अस्पताल पहुंचाया, जहां उनका इलाज चल रहा है। बताया जाता है कि मूलरूप से आजमगढ़ के निजामाबाद निवासी नौशाद अपने परिवार के साथ ऑटो से अपनी बेटी को उसके घर शाहगंज छोड़कर वापस अपने ससुराल शिवपुर वाराणसी जा रहा था। रास्ते में उक्त स्थान पर ऑटो खड़ा कर पेशाब करने के लिए उतरे थे, तभी पीछे से आ रही कार ने जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में सद्दाम (20), निशा बानो (18) घायल हो गए । जबकि नौशाद, उनकी पत्नी जायशा खातून और बेटा सहजान अली ऑटो से बाहर होने के कारण बाल-बाल बच गए। कार चालक घटना के बाद कार सहित मौके से फरार हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायलो को निजीय अस्पताल पहुंचाया । पुलिस आरोपी कार चालक की तलाश कर रही है।

सार्वजनिक गणेश उत्सव मंडल आयोजित रक्तदान शिविर में 80 यूनिट रक्त हुआ एकत्रित

बोरीवली, मुंबई। राजेंद्र नगर रहिवासी सार्वजनिक गणेश उत्सव मंडल द्वारा विघ्नहर्ता श्री गणेश जी की दिव्य मूर्ति स्थापित की गई है। गणेशोत्सव अवसर को विशेष तथा लोक हितकारी बनाने के लिए इसी गणेशोत्सव पंडाल परिसर में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रमुख अतिथि के रूप में उत्तर मुम्बई के पूर्व सांसद गोपाल शेट्टी उपस्थित हुए। स्वागत सोसायटी, एफसीआई कॉर्नर, बोरीवली-पूर्व में आयोजित इस रक्तदान शिविर में कुल 80 यूनिट रक्त बोतलों का संकलन किया गया। जनसेवक गोपाल शेट्टी ने इस अवसर पर सभी रक्तदाताओं को प्रमाण पत्र प्रदान किया और भविष्य में भी समय समय पर रक्तदान जैसा महादान करने के लिए सबको प्रेरित किया। शिविर में संस्था के अध्यक्ष तमन कास्याराम व व्यंकटेश कास्याराम सहित मंडल के सभी पदाधिकारी उपस्थित रहे।

सड़के खोदकर उसे रिस्टोर नहीं करने पर कार्यदाई संस्थाओं की सिक्योरिटी मनी की जाएगी जब्त

पीडब्ल्यूडी सड़के गड्ढामुक्त करे, अन्यथा होगी कड़ी कार्यवाही : राज्यमंत्री

* अभियान चलाकर बदले जाए जर्जर तार और पोल

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) खेल एवं युवा कल्याण गिरीश चंद्र यादव की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में विद्युत विभाग, जल जीवन मिशन, नगर पालिका सहित विभिन्न विभागों की समीक्षा बैठक संपन्न हुई। बैठक में राज्यमंत्री के द्वारा निर्देशित किया गया कि जिन विभागों के द्वारा सड़के खोदकर कार्य किए जा रहे है, एक दूसरे से समन्वय करते हुए कार्य करें जिससे दूसरे विभागों की सर्विस प्रभावित न हो। उन्होंने जनपद में

कार्य कर रही गैस एजेंसी सहित अन्य कार्यदाई संस्था, जो सड़के खोदकर उसे रिस्टोर नहीं कराएंगी, उनकी सिक्योरिटी मनी जब्त करने की कार्यवाही करने के निर्देश दिए। उन्होंने अधीक्षण अभियंता पीडब्ल्यूडी को स्पष्ट निर्देश दिए कि जनपद में सड़के गड्ढा मुक्त करे, अन्यथा कड़ी कार्यवाही सुनिश्चित की जाएगी।

राज्यमंत्री ने अधीक्षण अभियंता जल निगम से सीवर के अवशेष कार्य और सड़कों के रेस्टोरेशन के संबंध में जानकारी प्राप्त करते हुए निर्देश दिया कि जहां पर अभी कार्य कराए जाने है उसकी सूची दे। उन्होंने डूडा विभाग को निर्देशित किया कि जितनी भी सड़क बनाई जानी है उसमें तब कार्य शुरू करें जब तक वहां पर सीवर, विद्युत, गैस आदि के कार्य न कर लिए गए हो। एक्सईएन जल जीवन मिशन ग्रामीण से जानकारी प्राप्त करते हुए निर्देश दिया कि एफकॉन और वेलस्पन दोनों कार्यदाई संस्था विस्तार से जानकारी दे कि 2 महीने के भीतर कितना कार्य किया गया है। राज्यमंत्री ने विद्युत विभाग की समीक्षा करते हुए स्पष्ट निर्देश दिए कि युद्ध स्तर पर करते हुए चिन्हितकरण कर जर्जर तार, पोल को बदलने और खुले में रखे ट्रांसफार्मर को ढकने के कार्य किए जाएं। अधिशासी अधिकारी को निर्देशित किया कि नालों की सफाई कराए, कही भी जलजमाव की स्थिति उत्पन्न न हो। अभियान चलाकर सफाई की जाए, उन्होंने कहा कि नगर क्षेत्र में सफाई नियमित होनी चाहिए, इसके साथ ही डेंगू, मलेरिया एवं अन्य संक्रामक बीमारियों के प्रसार न हो इसके लिए पूर्व से ही एक कार्य योजना बना लें और फागिंग मशीन, झाड़ियों की कटाई सहित अन्य कार्य सुगमता और सरलता से संपादित हो इसके लिए रणनीति तैयार कर ले। राज्यमंत्री मंत्री के द्वारा उपस्थित सभी विभागाध्यक्षों को निर्देशित किया गया कि अपने-अपने विभाग से संबंधित छोटे-बड़े सभी कार्य समय से संपादित करना सुनिश्चित करें। इस अवसर पर अध्यक्ष नगर पालिका परिषद जौनपुर श्रीमती मनोरमा मौर्या, जिलाधिकारी डॉ० दिनेश चंद्र, मुख्य विकास अधिकारी ध्रुव खाड़िया, मुख्य राजस्व अधिकारी अजय अंबष्ट सहित अन्य जिलास्तरीय अधिकारीगण सहित अन्य उपस्थित रहे।

जीवन रक्षा हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर

डा0 नवीन कुमार सिंह
M.B.B.S., M.S. (Ortho)
हड्डी व जोड़ रोग विशेषज्ञ

डा0 शिल्पी सिंह
M.B.B.S., M.S. (Obs & Gyn)
स्त्री रोग विशेषज्ञ

- फ्रेक्चर
- गठिया
- कमर दर्द
- ऑथराइटिस
- कूल्हा, घुटना प्रत्यारोपण
- इत्यादि रोगो का इलाज
- सिजेरियन डिलीवरी
- बच्चेदानी का ऑपरेशन
- ट्यूमर का ऑपरेशन
- दूरबीन विधि द्वारा
- बच्चे की जाँच
- नार्मल डिलीवरी

आयुष्मान कार्ड द्वारा निःशुल्क इलाज की सुविधाएं
इमरजेन्सी सुविधा 24 घण्टे उपलब्ध
नया पता- पुलिस चौकी के सामने, सिपाह, आजमगढ़ रोड, जौनपुर (उ0प्र0) 6390303050

TSMH त्रिभुवन सिंह मेमोरियल हॉस्पिटल

डा0 स्पृहा सिंह
M.B.B.S., MD (Pt. JNM Raipur)
CCEBDM (Diabeties)
जनरल फिजिशियन एवं मधुरोग विशेषज्ञ
पूर्व चिकित्सक आपोलो हॉस्पिटल, हैदराबाद

डा0 जयेश सिंह
एम.बी.बी.एस., एम.डी. (पीडियाट्रिक्स)
डी.एम. (नियोनेटोलॉजी)
(Fernandez Hospital, Hyderabad)
DASSI (KEM Pune)
ONTOP (AIIMS New Delhi)

पूर्वांचल के प्रथम व एकमात्र सुपर स्पेशलिस्ट नवजात शिशु व बाल रोग विशेषज्ञ

- नवजात शिशु का आई.सी.यू. एवं बच्चों के सभी रोगों का इलाज।
- निमोनिया, जन्म पर गन्दा पानी पीने वाले नवजात अत्याधुनिक आई.सी.यू. की सुविधा।
- समय से पूर्व (सतवासे) में पैदा हुए बच्चों का इलाज एवं बच्चों का समस्त टीकाकरण।
- हमारे यहाँ आयुष्मान कार्ड के द्वारा नवजात शिशु व बच्चों के डायलसिस की सुविधा
- निशुल्क उपलब्ध है। ▪ इत्यादि समस्त रोगो का इलाज की सुविधा।

हृदय रोग एवं डायबिटीज रोग विशेषज्ञ

- वयस्कों में हार्ट, किडनी, शुगर, पेट रोग, लकवा, पैरालाइसिस, निमोनिया,
- लीवर, डेंगू, मलेरिया, टाईफाइड, अस्थमा/दमा, हाईब्लड प्रेशर, मलेरिया,
- डायलसिस, सिजेरियन डिलिवरी, नसों में शून्नपन, मस्तिष्क ज्वर, पीलिया,
- हेपेटाईटिस बी., ल्यूकोरिया, खूनी पेचिस, सर दर्द, माइग्रेन, यूरिन इन्फेक्शन
- स्वास व फेफड़ा रोग व अन्य सभी रोगों का इलाज किया जाता है।

आयुष्मान कार्ड द्वारा निःशुल्क इलाज की सुविधाएं
पता- दिवानी कचहरी, अम्बेडकर तिराहा, जौनपुर (उ0प्र0)
05452-356274/ 7992031213, 9026551423

अरुणोदय सर्जिकल एण्ड ट्रामा सेन्टर

जनरल सर्जरी
स्त्री एवं प्रसूति रोग
आर्थोपेडिक (सर्जरी एवं परामर्श)
कीमोथिरैपी सुविधा उपलब्ध
न्यूरो सर्जरी (परामर्श एवं सर्जरी)

वेन्टिलेटर एवं डायलिसिस की सुविधा उपलब्ध
प्रशिक्षित डाक्टर स्टाफ तथा सभी मानकों पर खरा उतरने वाला जनपद का एक मात्र हास्पिटल
दूरबीन विधि द्वारा सभी प्रकार की सर्जरी
जनरल मेडिसिन, मधुमेह रोग

गुर्दा एवं मूत्र रोग (सर्जरी एवं परामर्श)
गैस्ट्रोइन्टरोलॉजी (इण्डोस्कोपी एवं कालोनोस्कोपी)
एक्सीडेण्टल एवं ट्रामा इमरजेन्सी सेवा 24 घण्टे उपलब्ध

डा. अरुण आर. सिंह
कन्सल्टेन्ट लैप्रोस्कोपिक सर्जन
रजि.नं.-82945 (यू.पी.एम.सी.)

डा0 पुनीत सिंह
M.S.M.C.H.
गुर्दा एवं मूत्र रोग विशेषज्ञ (यूरो सर्जन)

डा0 रवि प्रकाश सिंह
M.S. (Ortho)
हड्डी एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ

डा0 प्रभात सिंह
M.D.(Medicine)

डा0 सुमित कुमार सिंह
M.D.(Neuro Psychiatrist)

24/7 Emergency Services

बीमा कार्ड धारकों के लिए विशेष सुविधा उपलब्ध
आयुष्मान कार्ड द्वारा निःशुल्क इलाज की सुविधाएं
8090966086,8090015086
कलीचाबाद, जौनपुर

SALVATION HOSPITAL
साल्वेशन हॉस्पिटल

The Culture of Care

डॉ. प्रियंका श्रीवास्तव
B.A.M.S.
(स्त्री रोग विशेषज्ञा)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय
राज्यकर्मी कैशलेस चिकित्सा योजना
संबद्ध अस्पताल

आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना
के अंतर्गत सूचीबद्ध अस्पताल

24/7 Emergency Services
24 घंटे भर्ती की सुविधा

आई.सी.यू. | डायलेसिस | एच.डी.यू.
नेत्र विभाग | अस्थि रोग विभाग
दन्त चिकित्सा | किडनी विभाग
जनरल मेडीसिन | जनरल सर्जरी

डॉ. विवेक श्रीवास्तव
M.D. (Physician, F.G.O.
(APOLO HOSPITAL) P.G.D.S.
Member of Indian Medical
Association UPMCI Rg. No. 95653

नोट- प्रत्येक महीने के दूसरे रविवार को प्रयागराज के गुर्दा रोग विशेषज्ञ डा0 सन्तोष मौर्य (M.D., D.M. Nephro) 12 बजे से 4 बजे तक उपलब्ध रहते हैं।

कंधरपुर, मुरादगंज, जौनपुर (वाराणसी-लखनऊ न्यू हाइवे के बगल में बाईपास से 400 मीटर की दूरी पर 9138828282, 8686867547

एस.आर.एस.
हॉस्पिटल एण्ड ट्रामा सेन्टर

डा. अभय प्रताप सिंह
MBBS (KGMU), DNB(Ortho), MS (Ortho)
UCN, FIJR (Germany), MNAMS
आर्थ्रोस्कोपिक एण्ड ज्वाइंट रिप्लेसमेन्ट आर्थोपेडिक सर्जन
हड्डी रोग विशेषज्ञ
ओ.पी.डी. प्रतिदिन

डा. आनन्द त्रिपाठी
MBBS, MD, DM (Neuro)
न्यूरो फिजिशियन
ओ.पी.डी. प्रतिदिन

डा. निदा सलाम
CGO
स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ
ओ.पी.डी. प्रतिदिन

डा. अरविन्द कुमार अग्रहरि
MBBS, MS, MCH (Neuro)
न्यूरो सर्जन
विजिटिंग/ऑन काल

डा. एस.के. मिश्र
MBBS, MS (General Surgeon)
जनरल सर्जरी
विजिटिंग/ऑन काल

डा. चंचला मिश्रा
MBBS, MS (Obs & Gyn.)
स्त्री रोग विशेषज्ञ
विजिटिंग/ऑन काल

डा. राजेश त्रिपाठी
MBBS, MD (Anesthisia)
एनेस्थिसिया रोग विशेषज्ञ
विजिटिंग/ऑन काल

7355 358194 05452- 356555

तेज डायग्नोस्टिक सेन्टर के सामने (पेट्रोल पम्प के बगल में) नईगंज तिराहा, जौनपुर

BAJAJ
ए. एम. बजाज

मो. अशहद

अब्दुल माजिद

मानी कलां, गुरैनी रोड, जौनपुर- 222139 9621032024, 9651316060, 9621139686

AMIR TRAVELS
Hajj & Umrah Services
DOMESTIC & INTERNATIONAL AIR TICKETS

Visit Visa, Holiday Tour Packages, Waqala Delhi & Mumbai Gamca & Medical Services
Emigration, Visa Stamping, Currency Exchange, Money Transfer

TV उत्तरशक्ति NEWS

- Withdrawal & Deposit Money From All (atm & Adhar Services)
- Passport, Pan Card & Driving License Services
- Common Services Center (csc) & Sahaj Jan Seva Kendra Related Services 7860303530, 9616636079

प्रो0- मो0 आसिफ सिद्दीकी संवाददाता गुरैनी, मानीकलां
सह- संपादक डॉ. इम्तियाज अहमद सिद्दीकी (उर्फ़ बाबू भाई) उत्तरशक्ति हिंदी दैनिक, जौनपुर-लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

निकट- नसीराबाद चौक, पूर्व प्रधान नेयाज़ अहमद कटरा, मानीकलां, जौनपुर (उ0. प्र0)